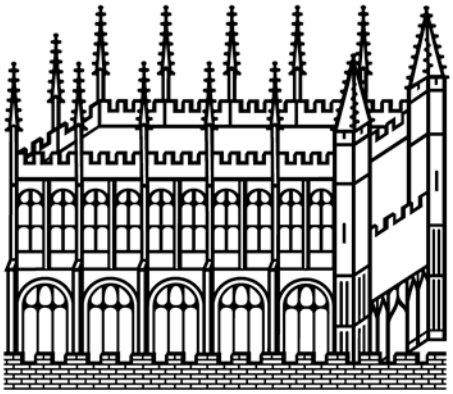


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

lindi
Gour
1

Hindi Govt 1

13.C.76.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Krajāvilāsa sārāvalī.

Braj billas sarawali

ब्रजबिलाससारावली

برج بلاس سارادلی

जिसमें

श्री कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द के जन्म से भँवरगीत

पर्य्यन्त की कथा संक्षेप रीति से सरल दोहों

में वर्णित है

जिसको

श्रीमान् दूसर वंशावतंस ईश्वरी प्रसादसिंहजीके

आत्मज गोवर्द्धन दास जीने निर्म्माण किया

वही

सम्पूर्ण श्री कृष्णानुरागियों के उपकारार्थ पहलीबार

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के प्राणाराम यन्त्रालय में छापीगई

सन १८८४ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् मई सन् १९०४ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेख़ाने के पुस्तकालिक अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर कीमत का निर्णय करलें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
काव्य	छन्दोर्णव पिंगल	पीयूष लहरी	सर्व लोक धर्म्म
रससागर	सरोज	शृंगार बत्तीसी	४-चौथे हिस्से में
कथा सागर	लहरि वर रसचन्द्रो-	**भाषा इतिहास**	शान्ति पर्व राज ध-
विश्राम सागर	दय	महाभारत	र्म्म मोक्ष धर्म्म आश्व-
प्रेम सागर	जगद्विनोद	१- पहिले हिस्से में	मेधिक पर्व व
ब्रजविलास बड़ा	नवीन संग्रह	आदि पर्व सभा पर्व	नो पर्व पर्व बना-
तथा छोटा	रासाई मूल	बन पर्व	प्रस्थान पर्व स्वर्गा
कथामृत	रासाई सटीक	२- दूसरे हिस्से में	रोहण पर्व हरिवंश
कथा बाललीला	सभा विलास	विराट पर्व उद्योग	पर्व
शंकर चरित सुधा	युगल विलास	पर्व भीष्म पर्व	महाभारत पर्व अ-
सुखसेज सुखसार	तुलसी शब्दार्थप्र-	द्रोण पर्व	लेहदा भी हैं-
उपदेश चन्द्रिका	काश	३- तीसरे हिस्से में	१- आदि पर्व
मंगल विनोद	प्रेमरत्न	कर्ण पर्व शल्य प-	२- सभा पर्व
विजय चन्द्रिका	चित्र चन्द्रिका	र्व गदा पर्व सौप्ति-	३- बन पर्व
सिद्धान्त संग्रह	प्रसाद कृत	क पर्व योषिक पर्व	४- विराट पर्व
राम विनय शतक	मनोहर लहरी	विशोक पर्व स्त्री-	५- उद्योग पर्व
विजय मुक्तावली	गंगा लहरी	पर्व शान्ति पर्व में	६- भीष्म पर्व
अनेक ग्रन्थ	यमुना लहरी	राजधर्म्म आपद्ध-	७- द्रोण पर्व

श्री गणेशाय नमः

अथ

ब्रजविलाससारावली

मङ्गलाचरण

जै जै श्री वल्लभ प्रभू जै जै श्री नंदलाल॥
जैजै श्री रुक्मिणि रमण बिट्ठलनाथ दयाल १
जै जै श्री रविनन्दिनी सकल सुरवन की रास॥
दीन दयाल कृपालु चित निज जन पूरण आस २
वंदौं चरण सरोज रज महिमा सुरवद अनंत॥
सदा कृपालु कृपालु चित जे जन हरि के संत ३
श्री ब्रज बासी दास जू मोतन होउ दयाल॥
मन वाञ्छित पुरवहु सकल बांह गहे गोपाल ४
ब्रज विलास ब्रजराज को सकल सार को सार॥
ललित काव्य तुम कृत विदित कथा अमित विस्तार ५
रचौं ग्रंथ सारावली ब्रज विलास को सार॥ ॥
सुंदर यश गोपाल को भक्तन प्राण अधार ६
गुण गाये गोपाल के बानी होय पुनीत॥

Hindi Govt 1

13.C.76.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Krajavilāsa sārāvalī.

Brij bilas sarawali

ब्रजबिलाससारावली

برج بلاس سارادلی

जिसमें

श्री कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द के जन्म से भँवरगीत

पर्य्यन्त की कथा संक्षेप रीति से सरल दोहों

में वर्णित है

जिसको

श्रीमान् दूसर वंशावतंस ईश्वरी प्रसाद सिंह जीके

आत्मज गोवर्द्धन दास जी ने निर्म्माण किया

वही

सम्पूर्ण श्री कृष्णानुरागियों के उपकारार्थ पहलीबार

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के मायाराम यन्त्रालय में छापीगई

सन् सन १८८४ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् मई सन १८८४ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेख़ाने के ठिकाने अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर कीमत का निर्णय करलें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
काव्य	छन्दोर्णवपिंगल	पीयूष लहरी	र्म मोक्ष धर्म्म
रत्नसागर	रसराज	शृंगार बत्तीसी	४-चौथे हिस्से में
कथा सागर	रसहरि वरसचन्द्रो-	भाषा इतिहास	शान्ति पर्व राज ध-
विश्राम सागर	दय	महाभारत	र्म आपद्धर्म्म मोक्ष
प्रेमसागर	जगद्विनोद	१- पहिले हिस्से में	स वासिक पर्व व
ब्रजविलास बड़ा	नवीन संग्रह	आदि पर्व सभा पर्व	नो राज पर्व बना
तथा छोटा	सतसई मूल	बन पर्व	प्रस्थान पर्व स्वर्गा
कथामालिका	सतसई सटीक	२- दूसरे हिस्से में	रोहण पर्व हरिवंश
कथावालसीता	सभा विलास	विराट पर्व उद्योग	पर्व
शंकर चरितसुधा	युगल विलास	पर्व भीष्म पर्व	महाभारत पर्व अ-
भुवनेश भूषण	तुलसीशब्दार्थप्र-	द्रोण पर्व	लेहदा भी हैं-
उपदेश चन्द्रिका	प्रेमरत्न	३- तीसरे हिस्से में	१- आदि पर्व
मंगल विनोद	चित्र चन्द्रिका	कर्ण पर्व शल्य प	२- सभा पर्व
विजय चन्द्रिका	सतसइया बलदेव	र्व गदा पर्व सौप्ति-	३- बन पर्व
सिद्धान्त संग्रह	प्रसार रत्न	क पर्व ऐषिक पर्व	४- विराट पर्व
रामविनय शतक	मनोहर लहरी	विशोक पर्व स्त्री-	५- उद्योग पर्व
विजय मुक्तावली	गंगा लहरी	पर्व शान्ति पर्व में	६- भीष्म पर्व
अनेकार्थ	यमुना लहरी	राजधर्म्म आपद्ध-	७- द्रोण पर्व

श्री गणेशाय नमः

अथ

ब्रजविलाससारावली

मङ्गलाचरण

जै जै श्री वल्लभ प्रभू जै जै श्री नंद लाल॥
जैजै श्री रुक्मिणि रमण बिट्ठल नाथ दयाल १
जै जै श्री रविनन्दिनी सकल सुखन की रास॥
दीन दयाल कृपालु चित निज जन पूरण आस २
वंदौं चरण सरोज रज महिमा सुखद अनंत॥
सदा कृपालु कृपालु चित जे जन हरि के संत ३
श्री ब्रज बासी दास जू मोतन होउ दयाल॥
मन वाञ्छित पुरवहु सकल बांह गहे गोपाल ४
ब्रज विलास ब्रजराज को सकल सार को सार॥
ललित काव्य तुम कृत विदित कथा अमित विस्तार ५
रचौं ग्रंथ सारावली ब्रज विलास को सार॥ ॥
सुंदर यश गोपाल को भक्तन प्राण अधार ६
गुण गावें गोपाल के बानी होय पुनीत॥

भक्ति बसे उर अघ नशे कृष्ण भजन परतीत ७
जे हरिजन यहि देखिव हैं बंदौं शीश नवाय ॥
और दोष नहिं मन धरैं पठन करैं चित लाय ८
हरिजन गाहिक गुणान के सो गुण हरिगुणगान॥
हरिगुण रहित बरवानियें सब ही ये गुणखान ९
दूसर वंशजनम लियो भयो गोवर्द्धन दास ॥ ॥
पुत्र ईश्वरीसिंह को ग्राम भोयड़े वास ॥ १०॥

अथ कथाप्रसङ्ग

नारद आगमन॥ पृथ्वीपुकार॥

श्री देवकि देवक सुता व्याहदई वसुदेव ॥ ॥
रथ चढ़ि पहुँचावन चल्यो कंस राव करि हेव ११
देवकी को सुत आठवों होय कंस को काल ॥
सुनि बाणी आकाश की नृप जिय शोच विशाल १२
प्रथम पुत्र वसुदेव तन क्षमाँ दृष्टि नृप हेर ॥
कियो न कछु अपराध इन दियो पिता को फेर १३
भयो ऋषी को आगमन रैवंती आठ लकीर ॥
भ्रमित कंस भावी प्रबल बिकल रह्यो नहिं धीर १४
करि अगेठ राखे दोऊ षट सुत डारे मार ॥
दुरित भूमि भइ पाप ते हरि पें जाय पुकार १५
तब कृपाल जन के सुखद भूमि उतारन भार ॥
कियो बोध सब सुरन को कह्यो धरन औतार १६

श्री कृष्ण को जन्म ॥ गोकुल को गमन ॥ जन्म उत्सव ॥

जन्म लियो हरि मधु पुरी दरश मातु पितु दीन ॥
नंद यशोमति हेत बसि गोकुल गमन जो कीन १७
भयो जनम उत्सव तहां गाये मंगल चार ॥ ॥
नन्द धाम आनन्द नित सुखमां बढ़ी अपार १८

पूतना ॥ कागासुर ॥ शकटासुर ॥ तृणावर्त्त बध ॥

पयपीवत नँद लाल ने हने पूतना आन ॥ ॥
स्वर्ग पठाई राक्षसी जननी गति पहिचान १९
कागासुर लै प्रयास ने फेंक्यो कंठ मरोर ॥
पर्यो जाय नृप कंस ढिग कह्यो काल है तोर २०
पग अँगुठा मुख मेलिकें पलना खेलें प्रयास ॥
शकट गिरा यो चरण ते कियो दनुज को काम २१
तृणावर्त मार्यो असुर पटक शिला पर दीन ॥
अंध धुन्ध सब दूरि करि ब्रज को दुःख हरि लीन २२

अन्नप्राशन ॥ नाम करण ॥ वर्ष गांठ ॥ ब्राह्मण पाक ॥ चन्द्र विलोना ॥

धर्यो दिवस शुभ शोधि कें बूझ्यो विप्र बुलाय ॥
कीनों अन्न प्राशना जाति कुटुम्ब जिमाय २३
गोकुल आये गर्ग मुनि नाम करण बलदेव ॥
देखि रूप हरि देव को वरणो सब ही भेव ॥ २४ ॥
प्रगट सुनायो जगत में अमित हैं इन के नाम ॥
कृष्ण कृष्ण सुमिरें सदा सब विधि पूरण काम २५

वर्ष गाँठि करि लाल की फूली यशुमति माय ॥
बोलि सकल ब्रज बधुन को मंगल गान कराय २६
पाँडे रुचिसों पाक करि परस धर्यो जब थार ॥
भोग धर्यो हरि हेत ही रवायो नन्द कुमार २७
चन्द रिलोना लेन कूं मचिले गोकुल चन्द ।
बिरु झाने भये नींद बश पुनि चौंके नँदनन्द २८

कथा पुरातन ॥ कन छेदन ॥ माटी खान ॥ शालग्राम-
अन्हवावन लीला ॥

जननी सुनावति लाल कूं कथा अवध पुरि गाय ॥
देत हुँकारी लाड़िलो हिरदय हर्ष बढाय ॥ २९
नख शिख कथा बिवाह पति अरु बनवास बखान
श्याम चौंकि माँग्यो धनुष सुन्यो हरण सियकान ३०
बेद न पावैं भेद कूं नेति नेति करि गान ॥
नन्द भवन में बैठ सो प्रगट छिदावैं कान ॥ ३१
खेल करत श्री मुखधरी माटी मोहन लाल ॥
बदन उघार दिखाय पुनि स्वर्ग धरणि पाताल ३२
बैठे नन्द समाधि करि हरि पद लाये ध्यान ॥
तिन के ठाकुर मेलि मुख बैठे श्याम चुपान ३३
ध्यान बिसर्जन नन्द करि खोजे शालिग्राम ॥
दिये नन्द के हाथ में करि चरित्र अभिराम ३४
अन्हवावन यशुमति कह्यो सुनि मचले घनश्याम

(लिख)

लरिवउबटन डर तप्तजल लोटनलागेधाम३५

खेलन समय॥ मारवन चोरी॥ यमलार्जुनउद्धार॥

बृंदावन बास॥

नँद नन्दन मोहन मदन भये आपदूक औरि॥
बलिदाऊ ठाढे भये सन्मुख दूजी ठोर ३६
सखा बृन्दलिये बाटही रच्यो खेलमनमान॥
अपनी अपनी घात करि मारिबदा चौ गान ३७
जाके गुणा गन अगम अति निगमनपावतओर
सोप्रभु खेलत ग्वालसँग बँधे प्रेम की डोर ३८
अधिक रसीली रस भरी लीला सुरवकी सार।
मारवन चोरी घरन घर कौतुकनन्द कुमार ३९
नित उठ लावैं उरहनो गोबरधन ब्रज नार॥
यशुमति सुनि नँद लाल कूं बरजतबारम्बार ४०
धनद सुवन उद्धार हित उदर बँधायो दाम॥
कियो बिदित तिहुं लोक में दामोदरनिज नाम ४१
गोकुल नित उत्पात लखि नंद महरपछिताय॥
सकल गोप मिल मतो करि बृंदावन बसिजाय ४२

गाय चरावन॥ बत्सासुर बध॥ गो दोहन सीखन॥

मुक्तावोदन॥ बकासुरबधलीला॥

गाय चरावैं जायँ बन ग्वालन सँग गोपाल॥
आवत संध्या के समय देख सुखी ब्रज बाल॥ ४३

बत्सासुर बन में हन्यो ग्वाल कहें घर आय॥
मधुरे बचन सुनाय हरि जननी शोच मिटाय ४४
श्रीरोहिणि दोहनि दई गो दोहन हरि कीन॥
मगन यशोमति निरख छबि दान द्विजन कों दीन ४५
ब्रज बासीजन जाहिं बल नारिन मंगल गान॥
बैठे गोप अथाइ मिल गोद लिये सुखदान ४६
बये नंद के अजिर में मुक्ता नंद कुमार॥
बार न लागी फरित फल ब्रज जन गूंथे हार ४७
चोंच फारि मार्‌यो बका ग्वालन प्रगट दिखाय॥
साँझ समय घर को चले बनते गाय चराय ४८
जननी आवत देखिके दौर लिये हरि गोद॥
भई चकित सुनि बक कथा मधुर बचन सुत मोद ४९

चकई भौंरा खेलन॥ राधा जी को प्रथम मिलन॥

चकई भौंरा हाथ ले सखा वृंद करि साथ॥
खेलें ब्रज खोरी मुदित गोपी जन के नाथ॥ ५०
मन भायो तिन को करें रोक टोंक दें गारि॥
मधुर हँसन मटकन चलन रस की छेरा छारि ५१
खेलत युमना तट गये सखा न कोऊ संग॥
प्रथम मिलन प्यारी तहां बढ्यो प्रीति रस रंग ५२
परी ठगोरी परस्पर मोहे नैन मिलाय॥
कहें श्याम खेलो न किन सदन हमारे आय ५३

गाय दुहावन हित गई प्यारी खरिक सभार॥
मन मोहन चित चोर मिल कीनों विविध विहार ५४
आप गये हरि निज सदन प्यारी धाम पठाय॥
देख विकल भये भीत कछु जननी खीज सुनाय ५५
घर नहिं बैठत फिरत बन कह्यो न मानत कान॥
दूर खेलन मति जाउ अब सुनि प्रिय मन मुसकान ५६
श्यामा बसी जो श्याम उर श्यामा के जिय श्याम॥
खेलन मिस प्यारी गई नन्द मंदर के धाम॥ ५७
नैन सैन मिल परस्पर विरह ताप बिसराय॥
देख रूप यशुमति मगन पूँछिति बैन सुनाय ५८
तू जाई है कोन की कहा पिता को नाम॥
राधे सब बरणान कियो बहुरि गई निज धाम ५९
राधे तन शृंगार लखि कीरति पति ढिग जाय॥
प्रीति रीति यशुमति सकल दीन्हीं प्रगट सुनाय ६०

अघासुर बध॥ ब्रह्माजी का मोह॥ गो दोहन लीला॥

मारि अघासुर श्याम ने सुर पुर दियो पठाय॥
गाय बच्छ ग्वालन सबै हित करि लिये बचाय ६१
बंशी वट मिल सरवन सँग आरोगत हरि छाक॥
बछरा चारन हेत बन कीने फेल फराक॥ ६२
भये बिरञ्चि जो मोह बश दूरे बच्छ गो ग्वाल॥
धरि अनेक बपु माँवरे कीनों चरित रसाल ६३

बर्ष बीत ग्वालन कह्यो श्याम हतन अघ कीन
अबिगत गति गोपाल की प्रगट न काहू चीन ६५
प्यारी लखि व्याकुल दशा धेनु दुहित नंदलाल॥
ले आनोवत वृषभ सों ठाढे हँसत गुवाल॥ ६५
गई प्रिया जब खरिक ही आपहु गये कन्हाय॥
दुही कुँवर नंद लाडिले श्री राधे की गाय ६६
चले दोऊ निज निज सदन मन माने सुखमान॥
विरह बिकल प्यारी भई हरि दृग ओट छिपान ६७
मग माहीं मिल सखिन सों गिरी धरणिमुर झाय॥
कह्यो मोहिं कारे डसी तन की सुधि बिसराय ६८
कहन लगीं सब परस्पर कारो कुँवर कन्हाय॥
लगी फूंकि कछु हमन कों याको बिष अधिकाय ६९
ले पहुँचाई सदन हीं कहि कीरति सों बैन॥
कारे अहि खाई कुँवरि देखहु अपने नैन॥ ७०
सो कारो हमहूं लख्यो बिष लाग्यो कछु घोर॥
याकूं अति अब गारुडी लावो नंद किशोर ७१
कीरत यशुमति पें गई लाई कुँवर कन्हाय॥
श्याम मंत्र पढि बाँसुरी प्यारी अङ्ग छुवाय ७२
राधे नैन उघारि तब सन्मुख देखे श्याम॥
देखत मुख सब दुख गयो जिय पायो बिश्राम ७३
चूमि मनोहर श्याम मुख कीरति लेति बलाय॥

ग्वान कह्यो मेवा मधुर दीन्हों पान बिदाय॥७४
चितै बिहँसि सखियन कह्यो भले गारुड़ी राय॥
गये सदन मोहन मदन तिन के चित्त चुराय॥७५

धेनुकासुर॥ काली मर्दन॥ दावानलपान॥प्रलम्बा-
सुर॥ पनघट लीला॥ चीर हरण॥ वृन्दा बन वर्णन॥

धेनुक मार्यो ताल बन श्री बल देव दयाल॥
काली दह मूर्छित भये गाय बच्छ अरु ग्वाल ७६
अमिय दृष्टि की वृष्टि करि हरि सब चैतन कीन॥
साँझ समय घर कूं चले लखि ब्रज जन सुख लीन ७७
सुनि यशुमति ग्वालन बचन गुनि चरित्र दोउ वीर॥
बचन गर्ग मुनि सत्य करि कह्यो दोऊ मति धीर॥ ७८
भोजन करि सुख सेज ही पौढे जन हित कार॥
यमुना जल निरमल करूं काली नाग निकार ७९
यह बिचार मन में करत भये नींद बश लाल॥
प्रात होत उठ सखन सँग रच्यो गेंद को ख्याल ८०
खेल करत कूदे यमुन दमन नाग को कीन॥
कमल पठाये नृपति कूं दावा नल अँचलीन ८१
मार्यो असुर प्रलम्बही फल बुझाय करि खेल॥
जै जै धुनि सुर गण करें बरष सुमन सुख केल॥ ८२॥
नित नव ठानत अचगरी पनघट गोकि मुरारि॥
उरहन लेआवें सदन बहु विधि ब्रज की नारि ८३॥

रस मय कथा सुहावनी चीर हरण सुखरास ॥
प्रेम प्रीत रस बशहरी दानी विविध बिलास ८४
वृंदा विपिन सुहावनो तरु तर बैठे श्याम ॥
सखा वृंद बैठे मुदित अरु भैया बल राम ८५
मधुर बचन वर्णन करें बन की महत बड़ाय ॥
सुख पायो बलराम सुनि ग्वालन मन हरषाय ८६

ऋषिपत्नी ॥ गो बर्द्धन लीला ॥ नंदएकाद-
शी ॥ वैकुण्ठदर्शन ॥

ऋषि पत्नी हरि दरश हित भोजन भरि भरि थार ॥
अति आतुर शिर धरि चलीं कुल की कानि बिसार ८७
भाव तियन को धारि उर भक्तन हित गोपाल ॥
रुचि करि सब भोजन लियो पठई सदन कृपाल ८८
करत बड़ाई श्याम की द्विज पत्नी गृह आय ॥
तिन के पति तिन दरश ते रहे बिमल मति पाय ८९
श्याम सिखावन पूज गिरि मुदित भये ब्रज लोग ॥
प्रगट दिखायो दरश निज अन्न कूट आरोग ॥ ९०
इन्द्रमान मर्दन कियो दीन्हों यज्ञ मिटाय ॥
गिरि गोबर्द्धन कर धर्यो ब्रज को लियो बचाय ९१
वरुण लोक ते नंद कूं ले आये नंद नन्द ॥
नन्दमहर ब्रज आय सब कहे चरित्त ब्रज चन्द ॥ ९२
कीन चरित्र बिचित्र हरि दिव्य दृष्टि करि दान ॥

दिखरायो बैकुंठ ही ब्रज बासिन कूं कान्ह ९३
नट वर बेष गोपाल बिनु अकुलाने सब कोय॥
भये सुरिवत पुनि रूप लखि विरह तापही खोय ९४

दान लीला॥ उन्मत्त अवस्था

भक्तन सुख दायक सदा चरित ललित गोपाल॥
दधि दानी भये प्रगट ब्रज रोकि टोकि ब्रज बाल ९५
ब्रज बनिता अरु श्याम को भगरन दान मँझार॥
भक्त जनन मन भावनी लीला सुख की सार ९६
जप तप सञ्यम नेम करि मुनि जन ध्यावें जास॥
परब्रह्म हरि भक्ति बश ब्रज नितबिबिधबिलास ९७
दान चरित गोपाल को प्रेम भक्ति की खान॥
गावत सुनत जो पाइये प्रेम भक्ति को दान॥ ९८
कृष्ण प्रेम उन्मत्त ह्वै ब्रज तिय बिसरी लाज॥
गुरजन सीखवन मानि मन अटकि श्यामब्रजराज ९९
लोक लाज कुल कानि तजि रँगी श्याम के रंग॥
कहैं जिन्हैं नहिं प्रीत हरि धृग है तिन को संग २००
मगन सकल ब्रज नागरीं प्रेम प्रीत ब्रजराज॥
तिनमें श्री कीरत कुँवरि सबहिन की शिरताज २०१
लोक लाज कुल सुधि गई बँधी प्रेम की डोर॥
शिर मटु की दधि बचन सुख लीजे नंद किशोर २०२
नंद द्वार पूँछत सखिन कोऊ देहु बताय॥

कहाँ बसत वह साँवरो मोहन कुवँर कन्हाय १०३
ठाढ़ी हूरे नंद के गई अपनपो भूल ॥
लगी करन शिक्षा सखी कुवँरि कहा यह शूल १०४
अतिहि सयानी नागरी सो क्यों होय अयान॥
कृष्णा प्रेम नहिं प्रगट करि रखिये गोय सयान १०५
कह्यो न मो मन हाथ में गयो श्याम के संग॥
और न सूझे काक कूं भो जहाज को ढंग १०६
देखि दशा कीरति कुवँरि चतुर सखी अतुराय॥
गई जहां मोहन मदन दीनी बिथा जनाय १०७
सुनत श्याम अति हर्ष मन साँचि प्रीत जिय जान
बिहँसि बिदा कीनी त्रिया मिले प्रिया अतुरान १०८
कुंज कुटी दोऊ मिले राधा नंदकिशोर॥
प्रेम बचन कहि परस्पर परम प्रमोदन थोर १०९
धाम पठाई भाँवती भेद पुरातन गाय॥
प्रीत पुरातन गोइये जग व्योहार जनाय ११०

प्रीति को दुरायबो ॥ स्नान॥

चली सदन गज गामिनी हरि छबि रहे निहार॥
अति आनंद उछाह मन राधे करत बिचार १११
यह धन प्रगट न करि कबूं काहूं भेद नहिं खोल॥
मिली सखी मग देख छबि बिहँसि वचन मुख बोल११२
कहे देत छबि अंग की मिली जो नंदकिशोर ॥

नहिं छिपात कैसे हूं सखी जो सुगंध को चोर २१३
सखी भई कह बादरी कहत प्रिया मुख बैन॥
तू जो कहत सो क्यों भवे मैं नहिं देखे नैन २१४
यह सुनि हँसि बोली प्रिया पढ़ि आई चतुराय॥
सुफल मनोरथ श्याम सँग हम सों कहा दुराय २१५
फिरत हुती व्याकुल अबैं तन की सुरत बिसार॥
जाउ प्रिया कभु लेहुँगी पकरि फंद में डार २१६
सकुच सहित कीरति कुवँरि आई अपने धाम॥
राधे घर बैठत न क्यों डोलत वन सँग श्याम २१७
ये जननी के बचन सुन प्यारी श्याम सुजान॥
भोर वचन कहि दूरि करि मन की सकल गिलान २१८
कहत गई नहिं आज लों प्यारी की लरिकाय॥
निज रिस कूं पछिताय पुनि कीरति हेत जनाय २१९
प्रथम सखी जो मग मिली कहे सखिन सों बैन॥
भेद छिपावन हरि प्रिया मिलन श्याम सुख दैन २२०
सो सुनि आगम सखिन को पिय प्यारी के धाम॥
नैन सैन रस बचन सुख कथा ललित अभिराम २२१
पचिहारीं सब गोपिका फिरी मान निज हार॥
गुप्त भेद हरि प्रिया को करि पायो न उघार २२२
राधा हरि उर में बसे सरस भजन सुख सार॥
यह चवाव घर घर न ब्रज ब्रज जन प्राणाधार २२३

श्री राधा उठ प्रात ही चली करन अस्नान ॥
पहुँची सखिन समूह में पायो आदर मान १२४
कहत अनोखी आज क्यों ए तौ आदर कौन ॥
सखिन कह्यो हम क्यों रहें जैसें तुम धरि मौन १२५
बचन तर्क के परस्पर रस मय हास बिलास ॥
गई यमुनतट गोपिका संग प्यारी सुखरास १२६
करि बिहार आनंद जल ठाढीं कंठ प्रमान ॥
ठाढ़े तट छबि देखवहीं आये रसिक सुजान ॥ १२७
कबहुँ मधुर कल बेणुमें नान्हे सुर कछु गाय ॥
नखशिखवद छबि हरि मन हरन वर्णतपारनपाय १२८

छबि वर्णन ॥ सखी अवस्था ॥ बाट को मिलन ॥
संकेत को मिलन ॥

प्यारी निरखन रूप हरि मतिगति देत भुलाय ॥
और सखिन चरचा सुखद वर्णन छबि हरिराय १२९
यह शुभ चरित सुहावनो भक्तन पूरण काम ॥
हितचित करि नितसुमिरिये मगन ध्यान घनश्याम १३०
अंग अंग छबि श्याम की निरखैं सब ब्रज नार ॥
भटक्यो मन ब्रजतियन को निज निज रुचि अनुसार १३१
मोह लियो मन सभन को छबि सागर रस खान ॥
ब्रज बनिता अरुझी विवश सकत नहीं सुरझान १३२
मुरलीधर कछु मधुर धुनि ले प्यारी को नाम ॥

अनुपम छवि दरशाय निज गये सदन कुंप्रयाम १३३
रहीं ठगीं ब्रज नागरीं लियो कृष्ण मन छीन ॥
गईं सकल निजनिज सदन युगुल प्रेम रसलीन १३४
हरि तिन के उरमें बसे बिनु देखे नहिं चैन ॥
गृह कारज नहिं मन धरैं सुनैं न गुरुजन बैन १३५
हरि रस लीला मगन मन गोपी गरा धरि ध्यान॥
प्रेम भक्ति निशदिन करें हरि प्रयाम गुण गान १३६
मन मोहन मन मोहनी गईं जो अपने धाम ॥
मन मोहन बिनु कल न छिन मन खीजत काहि बाम १३७
हरि बिसुरवन के संगते कोन भाँति करि छूट॥
प्रयाम दरश रस सरस सुख पाऊं निशदिन लूट १३८
बिन सुंदर हरि मन हरण जग जीवन धृग जान॥
धृग लज्जा धन धाम धृग धृग कुल गुरजन कान १३९
सखी अवस्था प्रिय कथा प्रेम भक्ति को सार।
मिले बाद संकेत वन राधा नंद कुमार ॥ १४० ॥

॥कुञ्ज विहार प्यारी के गृह को मिलन॥

तट खोई मोती सरी प्रिया मानु समुझाय ॥
गये प्रयाम बन कहि महरि आई लोही गाय १४१
नवल कुंज दोऊ मिले बिलसत मदन बिलास॥
भरे परम आनंद रस दम्पति रस की रास ॥ १४२
गये युगुल निज निज सदन चतुर शिरोमणि जान॥

दोउ जननी धीरज दियो करि निज चरित सयान १४३
भये श्याम बश प्रीत के लख प्यारी जिय चैन ॥
अति अनुराग भरे दोऊ नैन सैन रस मैन १४४
प्रेमाकुल मग में मिले मन डरपी सकुचाय ॥
सखिन संग बोली न मुख दीनों भाव जनाय १४५
काहू तिय प्रति कहि प्रिया गेयो हमरे धाम ॥
गुप्त भाव जान्यो सबै चतुर शिरोमणि श्याम १४६
बसे रैन प्यारी सदन मोहन नंद कुमार ॥
प्रगट दियो सखियन दरश निकस भवन के द्वार १४७
करत सखी परिहास सब आई प्यारी पास ॥
कियो बोध सब तियन को बानी मधुर प्रकास १४८
सुन प्यारी के मृदु बचन अरु सखि परम सयान
धनि धनि धनि सखियन कह्यो उर नहिं हर्ष समान १४९
तू अर्द्धंगिनि श्याम की धनि धनि तेरो नेह ॥
एक प्राण है देह तुम जानो निस्संदेह ॥ १५०

गर्ब्ब व्याज विरह ॥ परस्पर रूप अभिलाष
बन कुञ्ज गमन ॥

गर्ब विभञ्जन जन सुखद आये प्यारी धाम ॥
झाँक्यो प्यारी तन उझकि कियो गर्ब ही बाम १५१
कटुक वचन मुखसों कहे देख्यो भरि नहिं नैन ॥
तुरत गमन तहँ ते कियो ह्वै उदास गुन रैन ॥ १५२

बिरह बिथा ब्याकुल प्रिया घर बाहिर न सुहाय
देखि दशा पूँछें सखी सो सब प्रगट सुनाय २५३
सुन राधे करतूत निज करि दुराव बहु ढंग ॥
महत गवाँयो आपनो फिरत श्याम के संग २५४
जो चाहो पिय बश कियो बैठो मान बढ़ाय ॥
कहत प्रिया यह को करे बिरहा अनल जराय २५५
प्रिया सखी जब प्रीति बश प्रीतम जाय सुनाय ॥
प्रीतिमान प्रीतम बिहँसि मिले प्रिया सो आय २५६
मिलन देत दम्पति सुखद सखिन परम अनुराग ॥
धन सुख लूटत निरख छबि राधा श्याम सभाग २५७
युगुल रूप जहँ परस्पर करत सुधा छबि पान ॥
बिवश भये प्रिय रूप लखि मोहन रूप निधान २५८
कबहुँ पीत पट बाँसुरी वारैं नन्द कुमार ॥ ॥
कबहुँ बारि तन मन हरष प्यारी रूप निहार २५९
मगन श्याम रस बाम के निज स्वरूप सुधि खोय ॥
मन सिहात शोभा निरख कुवँरि सरीखन कोय २६०
पुनि पुनि मन अभिलाष करि भूषण तिय निज लीन ॥
नख शिख शोभा मन हरण रूप प्रिया को कीन २६१
प्रिय भूषण हँसि हँसि सकल माँगि लिये जो बाम ॥
नागर नागरि साँवरी नागरि गोरे श्याम ॥ २६२
निरख रूप छबि परस्पर युगल रूप आनन्द ॥

मान कियो जब माननी विकल विरह नंदनंद १६६
हर्ष हँसे हरि सुनप्रिया तुमहिं कह्यो कर मान ॥
खेल करत मुरझाय तन कहा तुम्हारी बान १६६
मिट्यो बिरह हर्षी प्रिया लियो धारि निज रूप ॥
चले हरषि बन कुञ्ज को दोऊ नारि स्वरूप ॥ १६५
भुज भुज कण्ठ चले मगन गज गति झूमे सार ॥
बिछिया नूपर युगुल पग होत अधिक झनकार १६६
उतते चन्द्रावलि सखी आवत देखे नैन ॥ ॥
प्रिया संग यह साँवरी सखी कौन गुनऐन १६७
निकट आय लखि श्याम छवि हँसी चतुरई जान ॥
प्रगट करौं गुण दोउ न के कह्यो सखी तन ठान १६८
अब लो हम देखी नहीं सुन राधे ब्रज गेह ॥
कहां रहत आई कहां तुम सों कीने नेह १६९
मोहिं देखि घूंघट करत सुनी न अबलों कान ॥
तिय सों सकुचन तियन को प्यारी चतुर सुजान १७०
घूंघट पट हां तो कियो परस बदन मुख बैन ॥ ॥
हम तन क्यों चित वत नहीं सकुच छाँड़ अरिनैन १७१
सुन राधे जब सों मिली तुम दोउ प्रीति लगाय ॥
बिसर दियो हम सियन को राखत भेद दुराय १७२
तुम हू कुशल येहू कुशल गुणनिधि परम सयान ॥
जाउ चले निज स्वारथी हमें हरष पहिचान १७३

दम्पति कियो विचार मन इन सों नाहिं उबार ॥
मिले अगाट उरलाय तब सकुच दुराव बिसार १७४
गये कुञ्ज बन सघन छवि उभै बाम बिच श्याम ॥
सुमन पुञ्ज अलि गुञ्ज लखि नरवशिखसुखको धाम १७५
विपिन सुहावन विमल अति शिथिय मुनपुलिन सुखदेन ॥
करि बिलास बिसरे नवन उठे प्रात छवि रैन १७६
लूटत सुख तहँ परस्पर रीझत छबिहि निहार ॥
चले कुञ्जते बिलस रस राधा नन्द कुमार १७७
सखी सहित ब्रज धाम ही आये राधा श्याम ॥ ॥
बसत प्रिया उर श्याम के श्यामा उर घनश्याम १७८

शृंगार भवन लीला ॥

भवन बैठि राधे करत निज तन सरस शिँगार ॥
कर दर्पन छबि निरख मन बाढ्यो हर्ष अपार १७९
प्रेम बिवश हरि साँवरो प्रिय बिनु लहत न चैन ॥
उझकझरो खन झाँकहीं मुदित निरख छबि नैन १८०
भ्रमित भई प्रति बिम्ब निज प्यारी मुकर निहारि
कहत कहां ते कोन यह आई सुन्दर नारि। १८१॥
जो मोहन यहि देखिहैं रीझ करेंगे संग ॥ ॥
को लायो करि बैरना किन कीन्हें ये ढंग ॥ १८२॥
डर पावत प्रति बिम्ब कूं हरि गुण करत बखान ॥
बेगि जाउ घर राखि प्रति शीश हमारी मान ॥ १८३

सुन सुन प्यारी के वचन हर्ष हरि गुरा रैन ॥ ॥
औचकि पाछे तें सुरवद मूंदे प्रिय के नैन ॥ १८४
अपने करि पिय कर पकरि करि सन्मुरव सुरव बैन ॥
मैं सरवियन घोरवे रही तुम हो पिय सुरव दैन १८५
मिले युगुल लपटाय उर रस मय बचनउचार ॥
गये सदन मोहन मदन इत प्रिय हर्ष अपार १८६ ॥
तेहि अन्तर चन्द्रावली आई सरवियन संग ॥ ॥
सादर सन्मानी सबै प्रिया पीत रस रंग ॥ १८७ ॥
मुकर कथा मूंदन नयन मिलन पिया सुन कान ॥
पुलिक प्रफुल्लित गात सब प्यारी भाग्य बखान १८८
तेहि अवसर पुनि श्याम ने दियो दरश अभिराम ॥
रूप ठगोरी लाय सब मोहीं ब्रज की बाम ॥ १८९ ॥

नैना अनुराग ॥

कहन लगीं सखि परस्पर हरि छबि अटके नैन ॥
नैना बड़ी बलाय जो मिले श्याम की सैन १९० ॥
मृदु मुसकनि घन श्याम के बेच दियो मन मोर ॥
रुचि करि हित घन श्याम सों फिरत न हमरी ओर १९१
रहे न काहू काम के अब ये हमरे नैन ॥
ह्वै गुलाम सन्मुख रहत संग श्याम दिन रैन १९२
लाज शंक डारी सबै जग उप हासि कराय ॥ ॥
सुनत न हठ करि अटक छबि पचिहारी समुझाय १९३

मगन ध्यान घन श्याम के ब्रज बनिता बड़ भाग॥
प्रेम विवश दूषत दृगन भरी परम अनुराग १९४
कृष्ण प्रेम पूरण सकल करत रही ये बैन ॥
करी छैल ब्रज चन्द ने मुरली धुनि रस ऐन १९५॥

मुरली को परेखो॥

सुनत श्रवण चकृत भई गई सकल सुधि भूल॥
कछु सँभार कछु ह्वै विवश प्रेमहिं डोरा भूल १९६
ह्वै सुचेत कछु धीर धरि बोली गोप कुमारि ॥
ब्रज में आई कौन यह मुरली सौति हमारि १९७
आवत ऐसे ढंग करि वश करि लीन्हें श्याम ॥
सहजहि चारवत अधर रस अभिलाषित ब्रजबाम १९८
आवत हमरो धन लियो भई कठिन दुख दाय॥
सजग होउ सखि करियतन मुरली दूर कराय १९९
नन्द नदन जा बशि भये रीझ अनोखी बाम ॥
कियो विदित तिहुँलोक में मुरलीधर सो नाम २००॥
जाके सँग मिलि गावहीं नाना तान तरंग ॥
अब नहिं छूटत श्याम सों या मुरली को संग २०१
कहा भयो हरि सुख लगी अपनी प्रकृति न त्याग॥
काष्ठ बंश प्रगटी निठुर निठुर सुनावत राग ॥ २०२।
श्याम किये हमते निठुर अपनोइ स्वारथ साध ॥
कहां रहत आई कहां हीन जाति बन व्याध २०३

कोउ मुरली की कुल कथा बर्णत निन्द अपार॥
कोऊ सराहत धन्य तप मिली जो नन्द कुमार २०४
मुरली सरि कोऊ मति करो धनि धनि ताहि बरवान
फैलि रह्यो त्रि भुवन सुयश शारदादिगणा गान २०५
देउ बजावन बाँसुरी मति बरजो चलि कोय ॥
बैर किये बाढ़ै विरस प्रीत किये रस होय ॥ २०६॥
हम सों मन्मुरव हे सदा लगि मुरव श्याम सुजान॥
सुनहु कान करि करि रही राधा राधा गान २०७
श्याम पियारी राधिका राधा प्यारे श्याम ॥
मुरली यह यश कहत मुरव सुन हर्षी ब्रज बाम २०८
श्री मुरव श्री राधे कह्यो धनि धनि याको बंस ॥
धनि धनि धनि हरि मुरव लगी करत सखी परिशंस २०९
जबहिं बजावें बाँसुरी मोहन मधुर तरंग ॥ ॥
ब्रज ललना सुन चकित अति पुलकित प्रफुल्लित अंग २१०
धनि धनि जग सोइ गाइये जिन उर सदा निवास॥
मुरली धर मुरली धरैं प्रिया संग सुख रास ॥ २११॥

॥ शरद रास वर्णन॥

गोपिन तप हरि होहिं पति वर दीन्हों घन श्याम॥
चीर हरण करि सुख दियो बोलि बचन अभिराम २१२
मन भाई तुम्हरी वारं शरद रास आनन्द ॥ ॥
गये आप नन्दा विपिन शरद रैन नँद नन्द॥ २१३

सुरत निधि रसनिधि रूपनिधि श्री वृन्दा बन धाम॥
महत अमित बेदन विदित हरि बिहार विश्राम २१४
देख श्याम बन धाम सुख सुमन सुगंध अपार॥
शरद रयन यमुना पुलिन रुचि रस रास बिहार २१५
श्री मुरली धर अधर धरि मुरली धुनि रस मूल॥
शिव विरञ्चि मुनि सुनि अवश गये अपन पो भूल २१६
मन मोहन बंशी बजी छाई धुनि तिहुँ लोक॥
विश्व बिमोहन सुख सदन हरन ताप अघ शोक २१७
प्यारी पिय नँद नन्द की ब्रज तिय रस अधिकारि॥
सुनि धुनि बोरी सी भई उरतें धीरज डारि २१८
बाजी बाजी काहि उठीं प्रेमा कुल ब्रज बाम॥
मुरली धुनि पिय बोल हीं ले ले सब को नाम २१९
चलीं सकल गृह काज तजि लोक लाज सब डार
प्रेम बिवश नहिं सुरत तन कीन्हों उलट शिँगार २२०
मुरली धुनि मारग गह्यो रोकि थके पितु मात॥
चलीं मगन हरि ध्यान धरि मुनीन सुत पति बात २२१
मिलीं श्याम बन जाय सब भरीं परम आनन्द॥
नट वर बपु मुरली अधर दरश सरस ब्रज चन्द २२२
मन ही मन अति हर्ष हरि कह्यो न तुम भलि कीन॥
आईं बन निशा त्यागा पति वेद पन्थ करि हीन २२३
निठुर बचन सुनि श्याम के बिरह विकल ब्रज बाल

बोले पुनि दोउ जोरि कर दीन वचन नँद लाल२२४
अङ्कम भरि सब हिन मिले धनि धनि प्रीत बखान॥
गये यमुन तट संग ले रस बिहार सुख दान॥ २२५
मन भायो सब को कियो नाना रंग बिलास ॥
बहुरि श्याम मिलि संग रुचि उपजायो सुख रास२२६
बिच गोरी बिच साँवरे मराडल बिधयों जोर॥ ॥
मधनायक निरतत चपल राधा नन्दकिशोर२२७
रास बिलास अपार सुख मुदित निरख सुर नारि
धनि धनि कहि बर्षे सुमन कौतुक लखि बलिहारि२२८
थकित भई निरतत जबै ब्रज सुन्दरि श्रम पाय ॥
श्रम जल पोंछित पीत पट मोहन पवन डुलाय२२९
रूप शील गुण आगरी लखि पति गति स्वाधीन ॥
मन में गर्ब कियो तियन अब हम पिय बश कीन२३०
कोउ अंपुान भुज दे कहत गर्ब धारि उर बैन ॥ ॥
भई अमित पिय पाँय थकि मुसकाने सुख दैन२३१
कोऊ कराठ भुज मेलिकें लटकि रही गर्बान ॥
सुनहु श्याम मोपें न अब होत निर्त अरु गान॥ २३२

॥ अन्तर्द्धान लीला॥

युवतिन मन हरि गर्ब लखि कहत मनहिं मुसकाय॥
करुं सदा मन भाय जन गर्ब न मोहि सुहाय॥ २३३॥
ले ब्रज भानु कुमारि संग ह्वै गये अन्तर्द्धान ॥ ॥

चकृत विकल सब गोपिका लखे न श्याम सुजान २३३
अति आतुर खोजत फिरैं चहुँ दिश दृष्टि पसारि ॥
कहें प्रिया मँगले गई रिस करि दें रस गारि २३४
चरण चिन्ह देखत फिरैं बन में होय अधीर ॥
श्याम श्याम कहि कुञ्ज में टेरत यमुना तीर २३५
हरि पद चिह्न लख्यो तियन प्यारी पद अभिराम ॥
बन्दन करि खोजत चलीं वाही मग ब्रजबाम २३६
कुवँरि कान्ह प्रिय संग बन बिलसत बिबिध बिलास
पतिहित लखि दियो गर्ब को पिय प्यारी जिय बास २३७
मोहित बश हरि सब कियो करि बिचार प्रिय होय ॥
और नहीं युवती कोऊ मो सम प्यारी पीय ॥ २३८ ॥
कहन लगी पिय बाँह गहि श्रमित चल्यो नहि जाय
सुनहु मित्र मोहन सुखद लीजे कन्ध चढ़ाय २३९ ॥
अन्तर्धान भये तुरत सुनत गर्ब मुख बैन ॥ ॥
निकट दुरे देखत दशा प्यारी की निज नैन २४१
भई चकृत गये श्याम कित पछितावत अकुलान ॥
नारि बुद्धि ओछी कियो प्रीतम सों अभिमान २४२
बिरह विथा रोवत बिपिन ढारत नैनन नीर ॥
तहँ आई ब्रजतिय सकल खोज करत बल बीर २४३
देख दशा पूँछ्यो तियन कह्यो कुवँरि सब खोल ॥
भई मन्द मति मान करि चढ़न कन्ध मुख बोल २४४

हँसि मोहिं कन्ध चढन कह्यो ह्वै गये अन्तर्धान ॥
छाँड अकेली वन गये कहन क्रिया विलखान २४५
चलीं सकल खोजित फिरैं कहां दुरेउ ब्रज राज ॥
चूक क्षमा प्रभु कीजिये दीन बन्धु रसिकराज ॥ २४६
तुमहिं सदा रक्षक रहे विविध भाँति हित हेत ॥ ॥
अहो नाथ जिय क्यों धरी सुरवद होय दुखदेत २४७
प्रेमाकुल घन बन फिरैं जड़ चेतन न सँभार ॥
बन बिटपन बूझैं बिलप देखेउ नन्द कुमार २४८॥
बन बन ढूंढ निराश ह्वै फिर आईं प्रिय पास ॥ ॥
श्याम विरह मनु नीर विनु तलफत मीन उदास २४९
पुनि जुरमिल गईं यमुन तट बैठि रास की ठौर ॥ ॥
करन लगीं सोइ गान गुण किये जो नन्द किशोर २५०
श्यामहि कोऊ न देख हीं निकट खरे गुण ऐन ॥
बिरह ताप मन प्रीति दृढ लखत तियन के नैन २५१
गावत गुण भई कृष्ण मै बिसरी सकल अपान ॥
ध्यान ध्यान रस गोपिका भृङ्गी कीट समान २५२॥
करैं परस्पर चरित सब प्रगट प्रेम रस रूप ॥ ॥
भये निरन्तर जन सुरवद दियो दरश ब्रज भूप २५३
हर्ष क्रिया लइ लाय उर मिले सभन ब्रज राय ॥
बिरह ताप बिसराय पुनि बचन रसाल सुनाय २५४
तुम सम उत्तम प्रीति कहि तन मन अर्पन कीन ॥

नहीं उऋण तुम ते कभूं रहौं प्रेम आधीन २५५

॥महा मङ्गल रास॥

युवतिन मन की गाँसि सब दूर करी नँद लाल॥
पुनि महा मङ्गल रास रचि कीने चरित रसाल २५६
मगन भई तिय रास रस रीझत तन मन वार ॥
हिय हुलास रचि ब्याह विधि गाये मङ्गल चार २५७
दुलहिन श्री राधा कुवँरि दूलह नन्द कुमार ॥
ब्रज सुन्दरि सोरह सहस भाँवरि शोभा सार २५८
सुरगण लखि बर्षैं सुमन वृन्दाबन रस रास ॥
सखिन प्रीति रस रीति लखि दम्पति हर्ष हुलास २५९
एक बनी नँद राय जू इक बृष भान स्वरूप ॥
धाय मिले समधी दोऊ कहि कहि बचन अनूप २६०
बरसाने की रीत हित यशुमति कों दें गारि॥ ॥
कङ्कन छोरत अमित सुख बिलसैं ब्रज की नारि २६१
भये मनोरथ पूर सब शरद रैन सुख दैन ॥ ॥
होत प्रात क्रीड़ा सलिल श्री यमुना सुख रैन २६२
मदन गुपाल बिहँसि कह्यो जाउ सदन ब्रज बाल॥
चलीं मगन ब्रज सुन्दरीं पति पाये नँद लाल॥ २६३
नन्द नँदन आनन्द निधि गये नन्द के धाम ॥ ॥
भक्तन मन रञ्जन सदा चरित ललित घन श्याम॥२६४

॥मान चरित्र॥ लघुमान॥

भक्तन फल दायक सदा पूरण बाञ्छित काम॥
यह बिचार मन में कियो गुण निधान घन श्याम २६५
युवतिन कियो जो रास में गर्व साध मन माहिं॥
अन्तर करि हरि हर लियो हमै मनायो नाहिं २६६
सो अब मान चरित्र करि पूरण करि हौं साध॥
मान छुटाऊं पाँय परि माँगि क्षमाँ अपराध॥ २६७
नन्दनँदन सोचकि गये प्यारी भवन शिँगार॥
हर्ष अङ्ग भरि निरखि छबि कमल बदन बलिहार २६८
पिय मन तन परछाहिं लखि झझकि प्रिया मन जान।
और नारि पिय हिय बसत आये मोहिं दिखवान २६९
कियो मान उपजाय भ्रम अनरव बचन कहि पीय॥
बात मिलावत हो अगट हित जासों जो हीय॥ २७०॥
प्यारी रिस करि मौन गहि लियो मान उर धारि॥ ॥
गारि मनहिं मन सौति कों डरे न बोल मुरारि। २७१
मान करत रिस करि वृथा बिना जानि अपराध॥
कहन लगो श्री मुख बचन हम नहिं कीन असाध २७२
मो मन तुम परछाहिं तन अधिक रोस सुन कीन॥
जाउ चले बोलों नहीं त्रिया और उठ लीन॥ २७३॥
अति व्याकुल शोचत महा बिरह बिवश ब्रजराय॥
बदन गयो मुरझाय हरि पूँछि दूति कों आय॥ २७४

बैठे कहा गवाँय तुम क्यों तन रहे भुलाय ॥ ॥
दशा आज कैसी लखत क्यों नहिं कहत सुनाय २७५
प्रिया रूसि परछाहिं लखि बिनु समुझे हठ कीन॥
मदन दुखद निज विकलता कही सखी सुन लीन २७६
चतुर सखी बन ले गई बैठारे दे धीर ॥
आतुर चलि गइ कुँवरि ढिग कहि बोलत बलबीर २७७
काहि बुलावत श्याम मोहिं अनरव बचन प्रिय भाखि
भली भाँति लिये जानि मे नई नारि उर राखि॥ २७८॥
कहा कलह भयो आज कछु कहत अन मनें बैन॥
कह्यो न हरि कछु सहज ही पठई तुम कों लैन २७९
चतुर दूति का कुँवरि सों कहे चतुरता बोल ॥ ॥
बिहँसि लई लपटाय उर छाँडि मान मुख खोल २८०
पैठे दई बन धाम कूं कह्यो पिया सो जाय ॥ ॥
आवत श्री वृष भानुजा अङ्ग शिँगार बनाय॥ २८१
मिली जाय राधे कुँवरि मन मोहन नँद नन्द ॥ ॥
गुण सागर नागर युगुल रस आगर सुख कन्द २८२
वृन्दावन घन कुञ्ज छवि भँवर गुञ्ज अभिराम ॥
सुमन पुञ्ज सुख धाम अति विलसत राधा श्याम २८३
नयन कोर ताकन लगी प्यारी पिय को हीय॥ ॥
पीताम्बर ले आपनो ढाँक लियो तब पीय २८४
बलि हारी सखि मुख कह्यो सो छवि लखि सुखपाय

अविचल जोरी मोहनी श्यामा श्याम सुहाय २८५
गये श्याम श्यामा सदन सखी सहित करि केल ॥
यहिबिधि ब्रज घर घर करत सदा श्याम रसरेल २८६
अवधि बदत काहू धाम की बसत काहू के धाम ॥
काहू लेत मनाय हरि रूठत काहू श्याम २८७ ॥
जाहि मिलन कहि रैन कूं मिलें ताहि परभात ॥
कहुँ आदर अपमान कहुँ सुख सुनरवरिइतबात २८८
ब्रज बिहरत ब्रजभाव तो ब्रज बनितन के संग ॥
बहु तरुनीरमनीय हरि कबिनिधि निधरस रंग २८९ ॥

॥ ललिता शीला को मिलन ॥ चन्द्रावली सुखमा को मिलन ॥

श्रीसुख ललिता सों कह्यो रहें तुम्हरे धाम ॥ ॥
बसे रैन शीला सदन रसिक शिरोमणि श्याम २९०
चन्द्रावलि सों अवधि बद सुखमा सदन सिधार ॥
होत प्रात दीन्हों दरश ठाढ़े अजिर निहार २९१ ॥
बोली तिय जिय रोष करि कहा काम मो धाम ॥
जाउ चले वाही सदन बसे जहाँ निशि श्याम ॥ २९२
रस चरित्र करि बश किये दीनों मान छुटाय ॥
अङ्कम भरि सब सुख दियो गये सदन ब्रजराय २९३ ॥

॥ मध्यम मान ॥

प्यारी पिय नँद नन्द की श्री वृषभानु कुमारि ॥ ॥
सहज रहतु मन आपने यही बिचार बिचारि २९४ ॥

नन्द सुवन मम धाम बिनु बसत न दूजे गेह ॥ ॥
के निज भवन रहत सदा चित में यही सनेह॥ २९५
एक दिवस उठ प्रात ही गये प्रिया के धाम ॥ ॥
अंग चिन्ह रति रंग स्मरि भयो कुवँरि उर ताम २९६
जाउ चले पिय तिन सदन जिन सँग कीनो हेत ॥ ॥
प्यारी सुख खरिाडत वचन सुन सुन पिय सुख लेत २९७
सकुच श्याम कहि मृदु बचन भूमि निहारत नैन॥
किन देख्यो कोने कहे तुम सों झूँठे बैन ॥ २९८ ॥
पिय बिन बोले ही रहो सब झूँठे तुम साँच ॥ ॥
सोंह करन सुन सुन बचन अधिक होत हिय आँच २९९
आई तहँ ब्रज नागरी हरि छवि रहीं निहार ॥
सखिन भीर स्मरि साँवरे गये शौच बश द्वार ३०० ॥
मान धारि मन माननी सखियन कहत सरोष ॥
देखि लेउ गुण श्याम के कह्यो न फिर मोहिं दोष ३०१
जान देउ कह काम हां मैं बैठी निज धाम ॥ ॥
प्रिया गई निज धाम कहि तुम हु जाउ निज काम ३०२
सखिन द्वार हरि सों कह्यो चतुर कहावत नाम ॥
अट पट रूप दिखाय क्यों रोष करावत बाम ॥ ३०३॥
श्याम पठाई दूति का गई प्रिया के पास ॥ ॥
हृदय रोष करि मान दृढ़ बैठी कुवँरि उदास ॥ ३०४ ॥
देखि दशा पूँछन लगी कियो आज कह मान ॥

कह्यो सखी कीजे कहा रुस वत श्याम सुजान॥ ३०५॥
लाज छाँड़ि घर घर फिरत करत अट पटे ढंग॥
आन दिखावत प्रात मोहिं अङ्ग गाठरति रंग॥ ३०६॥
जित चाहें तित हीं फिरें रही सखी मैं बाज॥ ॥
बिलसो घर घर ब्रज सदा उन को यहां न काज ३०७
परम सयानी दूति का सुने कुँवरि मुख बैन॥
प्रगट रोष रस प्रेम हिय देखि आपने नैन॥ ३०८
हारे ठाढे श्याम घन कहत मनहिं पछितात॥
पर घर भूलि न जाय हौं दीन होय सों रवात ३०९
मैं आई तो सों कहन प्रिया तजो नहिं मान॥
जब लों पर घर जानकी समुझ न छोड़ें बान ३१०
हें हारे यह सुनि प्रिया रस उमग्यो मन माहिं॥
चतुर कुँवरि हरि बल्लभा कियो सो परगट नाहिं ३११
काहे कों हारे रवड़ु क्यों न जाहिं निज गेह॥
गई सखी हरि सों कहन जान प्रिया मन नेह ३१२
कहत आन की आन मुख काहि मनाऊं लाल॥
नेकु मरम नहिं पाइये सूधे बोलिन बाल ३१३
मैं अपनो सो करि थकी वह निरखी भौं नान॥
कोटि कोटि मुख सों करत ये गुण तुम्हरे गान ३१४
कहा बसीठ करे कोऊ चलत न नेकु उपाय॥
सुनहु रसिक बर साँवरे लीजे आप मनाय॥ ३१५

भये बिकल सुनि साँवरे सखी चलीं दे धीर ॥
कह्यो जाय प्यारी निकट श्याम बिरह की पीर ३१६
यहै प्रीति की रीति है मिलिये श्याम सुजान ॥
करत श्याम तेरोइ चरित भरे प्रेम रस गान ॥ ३१७ ॥
प्रिया कहत जानी परी तोहिं पठाई श्याम ॥
नहिं मानूं तेरी कही कहा मिलन सों काम ३१८
कान्ह कपट की खान हैं कहत और की और ॥
तिन बानन ह्वै बलि छल्यो तू बरबान करि भौर ३१९
मान छुटावन हित सखी करि बरबान बिस्तार ॥
मुसकानी कछु माननी श्री मुख बचन उचार ३२०
इतकी उत तू करि रही झूठी बात बनाय ॥
गरज परें ऐहैं यहां आपहि हा हा खाय ॥ ३२१
सुन प्यारी के मुख बचन मुदित दूति का बाम ॥
तज्यो मान अब लाड़िली सुफल मनोरथ श्याम ३२२
कहन लगी ऐसेहिं रहो ल्याऊं हरि हिलिवाय ॥
पिय मन नूतन चोंप बढ़ि रस अनूप उपजाय ॥ ३२३
कह्यो जाय नंद लाल सों मैं मानी निज हार ॥
मान न छांडत लाड़िली रही कहा जिय धार ३२४
लीजे आपु मनाय चलि हूं थकि आवन जात ॥
मोसों जो पठ बहु कितिक नहिं माने प्रिय बात ३२५
कर बिनती तिय तें मिलों छांडि लाल उर लाज ॥

यही बेडन के बचन हैं आप काज मह काज ३२६
गये जहां बैठी प्रिया प्रयाम सखी के सङ्ग ॥ ॥
मगन प्रेम आधीन तन मन सकोच करि ढङ्ग ३२७
सुसकानी पिय रूप लखि डर पत हैं जिय जान ॥
कह्यो नहीं कछु मुदित मन प्यारी रही चुपान ३२८
अब नहिं उचटाऊं पियहि मन मनकरत बिचार ॥
आदर करि बैठन कहूं सकुचित नन्दकुमार ३२९
जीके जीवन पीय हैं तू प्यारी प्रिय जीय ॥
कहत सहचरी बोल मुख कबके ठाढेपीय ३३०
यह कहुँ भयो न आजलों सुन्यो नहीं हम कान
होत कौन विधि सूसिबो तनते जीवन प्रान ॥ ३३१
कराह लागि मिल पीय सों आदर करि बैठार ॥
वे ठाढे तू मौन गहि बैठी मान पसार ॥ ३३२ ॥
यह सुन हँसि प्यारी कह्यो राजो पिय घन प्रयाम ॥
करि मेरी सोंह बोलिये करिहुं न ऐसो काम ॥ ३३३
कह्यो सोंह करि लाल ने प्यारी शिर कर राखि ॥
सही आज तें बात यह देत सहचरी साखि ३३४
निज कर प्यारी ने दियो तबहि पान नँदलाल ॥
सखी सकल आईं तहाँ तेहि औसर तत काल ३३५
प्रयाम सोंह जानी सबै प्यारी मुख मुसकाय ॥
आदर करि बैठन दियो लखिसबहिन सुख पाय ३३६

विहँसि प्रिया सखियन कह्यो मगन भनंद उछाह॥
कह्यो सकल मिल श्याम अब भये चोरतें साह ३३७
यह सुख लाडली लाल को लखि सिहात ब्रजबाम
बसे रात प्यारी सदन गये प्रात हरि धाम॥ ३३८॥

॥ भ्रमदा कुमदा को मिलन॥

नन्द द्वार ठाढ़े लखे फिरे सकुच ब्रज राय॥
छिपे जाय भ्रमदा सदन निरख वदन सुखपाय ३३९
कहत सखी भूले कहां तरक बचन बहु भाँति॥
चले हंसत कहि आज हम सैहैं तुम्हरे राति ३४०
श्याम मिलन मन चाव अति रचि रुचि कियो शिँगार
गई बीत निश बाम कूं बैठी बाट निहार॥ ३४१॥
बसे श्याम कुमदा सदन बढ़्यो अधिक उर हेत॥
प्रेम रंग भीजे दोऊ अति उमङ्ग सुख लेत ३४२॥
भयो भोर भ्रमदा सदन दियो दरश हरि जाय॥
गुण निधान की चरित सुख भेटे मान छुटाय ३४३
समुझ समुझ पिय के गुण न परम हर्षतियमान॥
ब्रज नायक घन श्याम गुण सुखसागर रसखान ३४४

॥ अथ गुरुमान लीला॥

सखिन संग प्रिय प्रात उठि चली करन अस्नान॥
गई बुलावन जासु घर बसे रैन तहां कान्ह ३४५॥
प्यारी द्वारे जायबो पिय को निकसन द्वार॥ ॥

औचकि मिल चकृत भयें इत उत उभै निहार ३४६
रह्यो न्हान आई उलटि बिकल रोष मन धारि॥
रहीं सखी ठाढ़ी रहे ठाढ़े सकुचि मुरारि॥ ३४७॥
मुरझाने लखि लाल कूं सखिन श्याम समुझाय
पकरि बाँह ल्याई तहां रिस बैठी प्रिय जाय॥ ३४८॥
बैठी मान दृढ़ाय उर मगन रिसहि रस बाल ॥ ॥
चिन्ता बिकल ठाढ़े चकित मुख अबोल नँदलाल ३४९
सखिअन करत बिचार मन प्यारी जिय अति रोस॥
मिलैं कौन विध श्याम उर तज्यो धीर अपसोस ३५०
गईं सकल प्यारी निकट कह्यो कियो तुम मान ॥
मोहि लखि हरि डर पान अति मुरछ धरणि अकुलान ३५१
बहु नायक जानत नहीं कहा इतो दुख जीय॥
गहो बाँह लावैं निकट चूक क्षमा कर पीय ३५२॥
तुमहिं गहो किन श्याम भुज में बश भई निहाल॥
आलिहु सोंह पुनि आज हरि चले आपनी चाल ३५३
देख चुकी गुण श्याम के मिलों न तिन सों भूल ॥
अब जौलों तन प्राण हैं सहौं बिरह की शूल॥ ३५४
मैं ठानी मन आपने करुं न तिन को संग ॥ ॥
अंजन मुख मदनी लपट परस करौं नहिं अंग ३५५
अलिपिक बैनन करि अदरा नीलज लजन नहिं हाथ।
सुनत प्रिया की बात सब खरे पौरि ब्रज नाथ॥ ३५६

सखी कहत कीजे न हठ यह यौवन दिन चारि॥
याको गर्ब करत कहा नवले प्रिया की नारि ३५७
हुतो प्रेम धन तो अधिक सो कहूं दियो गवाँय॥
कहत रही रूसो नहीं अबनित बैठ रुसाय ३५८
जल ते न्यारी कौन विध कहियत प्रिया तरंग॥
रसरूसन मनु ओस कण रहे नित इक रंग ३५९
तुम वे एक न दोय हो कह्यो हमारो मान॥
चतुर नारि मिल पीय सों छाँड़ि मान अभिमान ३६०
करत रवनावन सकल तुम आइ बनावन बात॥
बहुत सही घर जाउ चुप कहत प्रिया रिसगात ३६१
तुम पुनीत पावन खरी जिन को भावत श्याम॥
भरी रोष यह कहि वचन मोहिं नतिन सों काम ३६२
गई सखी हरि सों कह्यो तजत मान नहिं बाम॥
थाकीं सबै मनाय हम करहु यतन कछु श्याम ३६३
कियो रूप तिय श्याम ने गये प्रिया के पास॥
सखि मिस बैठ निकट कह्यो श्रवण लागि सुख बास ३६४
मैं गइ बन घन श्याम सखि अति आरति सुनि बाम॥
इकली खरे द्रुम डार गहि रटत तिहारो नाम॥ ३६५
देखि दशा तहँ तें फिरी तिन कूं सुधि नहिं ओर॥
कहत कृपा प्रिय कीजिये पुनि पुनि करत निहोर ३६६
तो कारण नँद लाल ने परसे तेरे पाँय॥

सो मैं तुम्हरे पाँय परि हरि अपराध क्षिमाय ३६७
जो चाहत हरि को कियो दराड देउ सब मोहिं॥
अहो हठीली छाँड़ि हठ हा हा बिन बत तोहिं ३६८
क्षणापरसत प्यारी चरण क्षण क्षण करि बलिहार।
हाहा मुख मनवत प्रिया प्यारे नन्द कुमार॥ ३६९
चरित ललित नँद लाल के लखि सिहात सखि नैन।
मन मन हँसि भरि प्रेम रस अति अनन्द हिय चैन ३७०
चितयो प्यारी नैन भरि हरि ललिता छर जान॥
कहत श्याम छरि छंद गुण अजहुँ न छाँडत बान ३७१
फिर बैठी दे पीठ पुनि रहे लाल सकुचाय॥ ॥
हृदय बिरह दुख बाम को कहत न प्रगट जनाय ३७२
रिस बश धरत न धीर मन पीरा बिरह अपार॥ ॥
पट अन्तर निज अारसी पीतम बदन निहार ३७३
इत नागर उत नागरी दोउ चतुर गुण खान॥
प्यारी जित तित फेर मुख पीतम ढरन सयान ३७४
छुवन न पावत छाँहि हरि हारे करि छरि छन्द॥
मान न छाँडत माननी शोचविबश नँद नन्द ३७५
प्रिया निकट लखि श्याम कूं प्रेमा कुल अति दीन॥
राधेहि समुझावन लगीं सखियाँ परम प्रवीन ३७६
नुव भय हरि तिय रूप धरि मधुरे बचन सुनाय॥
कबके तोहिं मनवत खड़े मुख सों हाहा खाय ३७७

कियो और चाहत कहा पाँयन लागे पीय ॥ ॥
आदर करि चितवत नहीं कियो निठुर कह जीय ३७८
मान किये कह पाये है आदर कह घटि जाय ॥
प्रीतम तजि कहुं कीजियत बैरी सारिव बसाय ३७९
बश करि पायो लाल को तासों अति इतरान ॥
कहा तोहिं समुझाइये भलो कहत दुख मान ३८०
मान माननी मान तज मानहि रहिं है हाथ ॥
पछितैहै मन मान जब हिय दहि है रति नाथ ३८१
कह्यो हमारो मानरी ऐसे कहि है कौन ॥
भागि मान बश ह्वै परयो त्रिभुवन पति पति जौन ३८२
मान मनायो पीय को प्यारी समय बिचार ॥
बहुर समय कहँ पाइये नव यौबन दिन चार ३८३
ये दिन रूसन के नहीं पावस ऋतु राइ आय ॥
गरज गगन घन चपल चक चोंधित दामिनि धाय ३८४
मेघ बर्ष जल भूमि हित नारि न पिय अनुराग ॥
लपटत तरु बेली द्रुलसि सिंधु प्रीत सरि पाग ३८५
यहि औसर पिय संग मिल कीजै सुरत बिहार ॥
उमगि प्रेम यह बचन सुन प्रिय कछु रिसहि बिसार ३८६
नख लिख कहि किन जान ह्वाँ बिके जिन्हन के हाथ
चित्त चलत नित श्याम को मुँह चढी मोंसाथ ३८७
लाल तुम्हारे बिरद कूं करत साँचि जग गान ॥

निबर होत निज हितुन सों प्यारी बिहँसि बखान ३८८
हँसी कवँरि सखि वयन हरष श्याम प्रफुल्लित गात ॥
मिट्यो बिरह दुख कहत मुख हाथ जोरि यह बात ३८९
हित चित जीवन प्रान तू अनुदिन करि गुण गान ॥
मम पोषन तुम मृदु बचन अब तज प्यारी मान ३९०
कर जोरें विनती करौं कहे चरण शिर नाय ॥
यह सुनि कछु प्यारी हँसी बोली सखी सुनाय ३९१
रूप शील गुण खान तुम रस नागर घन श्याम ॥
एक प्रान है देह धरि प्रिया पीय सुख धाम ३९२ ॥
प्यारी के बिच पीय हैं पिय को प्यारी प्रान ॥
कबहुँ कि रस में बिरस परि करत कठिन कलकान ३९३
परसो प्यारी के चरण हम सब देत मनाय ॥
अब न रुठावहु भूल हरि बहुर मिलन कठिनाय ३९४
परम प्रीत परसे चरण दीन होंय नँद लाल ॥
छुट्यो मान मिट द्वन्द दुख प्यारी भई दयाल ३९५
हर्ष मिले दोउ प्रेम रस निरख सखिन सुख लीन ॥
उबट न्हवाय शृँगार करि भोजन अर्पण कीन ३९६
एकहि थार जिमाय पुनि अचवन करि दे पान ॥
सुमन सुगन्धित माल उर पहरायी सुख मान ३९७
लै बीरी निज हाथ सों दई प्रिया घन श्याम ॥ ॥
मिल बैठे दोऊ बिहँसि करत आरती बाम ३९८ ॥

राजत दोउ आनन्द भरि अरस परस छबि देख॥
बिहँसि कह्यो प्रिय पीयसों करिमनसाध विशेख ३९९
बर्षा ऋतु आई पिया रचहु हिंडोल सुरंग॥
करहु आश पूरण सकल मिल झूलैंतुम संग ४००
मुदित श्याम सुनि प्रिय बचन यहि विधि मानकुटाय
भक्त हेत लीला ललित निगम नेति तिन गाय ४०१
सुफल जन्म जग तासु को गावत गुण गुण रैन
युगुल बिलास हुलास नित हिय निवास सुख चैन ४०२

हिंडोर लीला वर्णन॥

भक्तवश्य हरि गाइये भक्तन हित अवतार॥
भक्तन मन भाये करत ब्रज में सुखद बिहार ४०३
गये श्याम वृन्दा विपिन प्रिया सखिन के संग॥
पावस ऋतु शोभा सरस यमुन पुलिन छबि रंग ४०४
बिहँसि कह्यो पियसों प्रिया रचिये यहाँ हिंडोर॥
विश्व कर्मा छबि मय रच्यो आय सुनन्द किशोर ४०५
परम सुहावन भूमि बन छबि हिंडोर नहिं पार॥
चढ़े उमगि आनन्द भरि राधा नन्द कुमार ४०६
मोर मुकुट पीताम्बर श्याम अंग छबि चार॥
प्यारी सारी बैंजनी चहुँ दिशि कोर किनार ४०७
युगुल अंग भूषण अमित सखियन रुचि पहराय॥
रतन हार शोभा सरस सुमन हार उर लाय॥ ४०८

गावैं सखि ऊंचे सुरन बाजे विविध बजाय ॥
पिय प्यारी झूलैं हरषि लखि छवि हियो सिराय ४०९
तृण तोरैं लखि युगुल छवि रीझत वारैं प्रान ॥
ब्रजसुन्दरि नव बाल सब सुनि पायो यह कान ४१०
वृन्दावन झूलैं दोऊ राधा अरु नँदलाल ॥
करि शृंगार आतुर चली घर तजि ब्रज की बाल ४११
अरुण चूंही चूनरी चुन पहरी ब्रजनारि ॥
यूथ मेलि हरिपैं गई हर्षे युगुल निहारि ४१२
निकट बुलावत आपने वचन सप्रेम सुनाय ॥
इक बैठत इक पैंग चढ़ि इक झूलवत इक गाय ४१३
रह्यो छाय सुरबन सघन राग रंग सुख जौन ॥
लाजि कोकिला करत कल वरणि सकै कवि कौन ४१४
नखशिख भूषण तन लसैं युवति वृन्द चहुं ओर ॥
भँवर भीर छाँड़त न सँग वसन सुगन्ध न थोर ४१५
नन्दनँदन सुख विमल शशि पूरण सुभग अभंग ॥
युवति उमंगि चहुं ओर छवि उमगत सिन्धु तरङ्ग ४१६
झुकझोरा दे चाव भरि बाढ़त लटक हिंडोर ॥
लेत सुमन ऊंचे द्रुमन हँसि हँसि नन्दकिशोर ४१७
बहत पैंग डरपत प्रिया थमवत सोंह दिवाय ॥
जब नहिं सकत सँभारि तन लपट पिया सों जाय ४१८
हँसैं बाल लखि लखि चरित रारवत पकरि हिंडोर ॥

कोऊउतरत कोउ चढ़त कोउ आतुरउठदौर ४१९
गारेवं रुचि हरि सबन की मधुर बचन मुख बोल
कबहूँ अकेले आपही झूलत लालहिंडोल ४२०
कबहुं झुलावत तियन कों मुरली मन्द बजाय॥
नारिन संग मिल रसिक बर गावत रस बर्षाय ४२१
सजल मेघ झुकि गगन में परि फुहार अमहार॥
अति सुगन्ध शीतल सुखद आवत सरस बयार ४२२
चातक पिक पियपियरटत शुकरटि राधानाम॥
गोपिन मिल करि केलि हरि सबबिधि पूरण काम ४२३
सुरगण लखि बर्षैं सुमन जैजैजै धुनि बोल ॥
भक्तन बश ब्रज करत नित पूरण ब्रह्म कलोल ४२४
नित नव मङ्गल होत ब्रज नित लीला आनन्द ॥
धनि जिन के चित नित रहत गुण निधान नँदनन्द ४२५

फाल्गुण समय वर्णन॥

ब्रज जन हँसि पियसों कहैं लखि लखि बारम्बार॥
ऋतु बसंत शोभा सरस बृन्दा विपिन निहार ४२६॥
कर जोरैं विनवत सकल सुन्दर ब्रज की बाल ॥
पुर बहु हम अभिलाष सब रचहु फाग नँदलाल ४२७
यही अधिक मन साध है फागु खेल तुम संग ॥
हो हो होरी होय हरि पिचकारिन भरि रंग ४२८
ब्रजहि मचावैं फागु रंग हँसि बोले ब्रजराज ॥

तुमहूं प्यारी साज सजि हम हूं सजैं समाज ४२९॥
भई मुदित ये बचन सुनि श्री सुख सों ब्रजबाल॥
सखा वृन्द लिय बोलि सब सदन जाय गोपाल ४३०
केसर किंसुकि रंग करि अतर अरगजा सान ॥
कञ्चन कलश अनेक भरि साजे विविधविधान ४३१
पीत अरुण तन बसन अरु भूषण ललित रसाल॥
सुमन माल उर मण्डली बनी रँगीली ग्वाल ४३२
ले गुलाल फेंटन भरी पिचकारी रँग हाथ ॥ ॥
नख शिख शोभा मन हरण नन्दसुवन ब्रजनाथ ४३३
चल्यो छैल नँद लाड़िलो सखा वृन्द चहुँ ओर ॥
होरी ब्रज खेलन चले मची धूम घन घोर ॥ ४३४॥
बाजत ताल मृदङ्ग डफ मुँह चँग सहना बीन ॥
झोरिन अबिर गुलाल उड़ि गावैं नाचप्रवीन ४३५
ब्रज बीथिन बीथिन फिरैं हो हो होरी बोल ॥ ॥
बचत न मग नर नारि कोउ घर घर फरिका खोल ४३६
डारि अबीर गुलाल रँग छाँड़त करि मन भाय ॥
भाजि छिपैं लावैं पकरि रस की गारि सुनाय ४३७
अटा बैठि ब्रज नागरी पिचकारिन रँग मारि ॥
अबिर गुलाल उड़ाय पुनि देहिं दिवावैं गारि ४३८
मह्यल अटारी रँग रँगे बीथिन कीच गुलाल ॥
लिये संग ग्वालन फिरत फागु खेल नंदलाल ४३९

खेलत कूदत ही चले बरसाने कूं श्याम ॥
कुवँरि राधिकापाय सुधि सखिन बुलायो धाम ४४०
बिहँसि कुवँरि सब सों कह्यो खेलें हरि के संग ॥
चलो पकरिये श्याम कों करि मन भाये ढंग ॥ ४४१
ललितादिक ब्रज सुन्दरी सज्यो साज तत काल ॥
युवति यूथ शोभित चलीं लैले रंग गुलाल ॥ ४४२
इतते श्री कीरति कुवँरि सखिन यूथ ले साथ ॥
गही बाट आगे निकस उततें श्री ब्रजनाथ ४४३
दोउ दिशि रुकि ठाढ़े भये सखा सखिन को गोल ॥
भो भट भेरो आन पुनि हो हो होरी बोल ॥ ४४४
अबिर गुलाल उड़त तहाँ घटा अँधेरी छाय ॥
दोउ दिशि जेरी चलि रही होत जराजर धाय ४४५
गये बसन तन सों चपकि रँग नहिं परत पिछान ॥
मुख शोभा कहियत कहा छबि गुलाल झलकान ४४६
पिचकारी रँग सों भरैं राधा नन्द कुमार ॥
तकि तकि मारैं परस्पर उर आनन्द अपार ४४७
गारी गावैं रस भरी सकुच रहित दोउ ओर ॥
ढूका मारैं ग्वालिनी ग्वाल भागि मुख मोर ४४८
सखिन बोल प्यारी कह्यो रचिये कछु छर छन्द ॥
पकरो लंगर कान्ह कूं मांडो मुख अरविन्द ४४९
छाँड़ो हा हा कराय कै काजर नयन लगाव ॥

वसन चुराये आन इन नाको लीजे दाव ४५०
सखियक हलधर रूप धरि गई निकट घनश्याम
लिये धाय औचक पकरि ओर हु धाई बाम ४५१
बंकम भरि हँसि हँसि कहत ढीठो दई मुरारि ॥
ताकों देहैं आज फल लेहैं दांव बिचारि ४५२॥
दूरि रकेउत ग्वाल हँसि इत वृषभानु कुमारि ॥
बाढ़्यो उर कछु इक सकुच पिय को बदन निहारि ४५३
कोउ छोरयो पट पीत कोउ काजर नयन लगाय॥
बेणीशीश सवाँरि सुख रंग गुलाल सुहाय ४५४
चले भागि छुटि हाथते मिले सखन सों श्याम॥
लेन न पाई दांव हम पछितावत सखि बाम ४५५
भजे आज बचि कल्हि क्यों कियो जो हम सों श्याम
दांव लेहिंगी आपनो कहत सकल ब्रज बाम ४५६
लेउ आपनो पीत पट अब नहिं पकरैं लाल ॥
कहत श्याम सों लाउ पट नारी दै हँसि ग्वाल ४५७
सखा एक तिय रूप करि पठयो श्याम सुजान ॥
गयो तियन के यूथ मिलि करि कै अधिक सयान ४५८
कहत नदै पट श्याम को सारवों याहि दुराय ॥
ऐसें कहि पट करलियो दियो लाल को आय ४५९
फेरयो कर सों श्याम ने चकित भई लखि नारि ॥
धुवति परस्पर कहत हम कीन्हीं श्याम गवाँर ४६०

कह्यो तियन नँद लाल सों भरी प्रेम अनुराग ॥ ॥
काहियो लेहिं नदांव जो लगी आन अबलाग ४६१
तुमहिं नचावैं पकरि हरि तो हम ब्रज की नारि ॥
कहत कान्ह कछु भय नहीं करि हौ कहा हमार ४६२
सखी कहावत जिन्हन की करत हुं तिन की कान।
छाँडुं बिनय करांय अब देउँ ग्वाल लपटान ४६३
तुम्हैं सोंह है नन्द की करो न तुम ये काम ॥
लेपिचकारि सखन सहित कर्षे सुन्दर श्याम ४६४
इकठोरी ह्वै नागरी नोलामी लै दौर ॥ ॥
मारि हटायो सखन को भाजे नन्द किशोर ४६५
तियन बिहँसि तारी दई भाजे मोहन लाल ॥
नाम लजायो बाप को सुनि पुनि फिरे गोपाल ४६६
शिथिल करी ब्रज गोपिका झोरिन मारि अबीर ॥
रसिक पुरन्दर साँवरे सखन संग अति भीर ४६७
होरी खेलैं मिलि सकल दोउ दिशि मगन हुलास ॥
अरस परस छबि लखि मुदित दम्पति रसकी रास ४६८
सुर गण लखि बर्षे सुमन जैजै करि यश गाय ॥
ललिता आय कहे बचन सुनहु कुँवर ब्रजराय ४६९
औचकि आये श्याम तुम हम काहू नहिं जान ॥
करी ढिठाई अधिक ही साँझ भई नियरान ४७०
काल्हि हमारी बार है रहियो सजग गोपाल ॥

नन्द गाँव चढ़ि धाय हैं खोलि सुनायो बाल ४७१
खेलन अवधि बदि प्रात की सखिवयन राख्यो मान ॥
दीनो मोहन लाल को ले प्यारी सों पान ॥ ४७२
मगन खेल गावत हँसत घर आये घनश्याम ॥
सखिन संग आनंद भरि कुवँरि पधारी धाम ४७३
लोक लाज कछु भय नहीं कृष्ण केलि सुख लीन
श्री राधा कीरति कुवँरि सखियाँ प्रेम प्रवीन ४७४
प्रातहि कियो बिचार मन चलैं नन्द के धाम ॥
होरी खेलैं श्याम सों सुफल होहिं मन काम ४७५
भाँति अनेकन अरगजा मथि सुगन्ध करि लीन ॥
रंग गुलाल भरि भरि कलश काँवरियन संग कीन ४७६
साज खेल सब ले चले काँवरि भरे कहार ॥
कियो कुँवरि सखियन सहित नवसत साजि शिंगार ४७७
प्यारी सब नँद नन्द की प्रगेभा अमित अनूप ॥
हाथ लिये सुमनन छरी बाम छबीली रूप ४७८
तिन में श्री राधा कुवँरि राजत अति अभिराम ॥
होरी खेलन संग हरि चली नन्द के ग्राम ॥ ४७९ ॥
प्रेम प्रीत के रस पगी पिय के भरि अनुराग ॥ ॥
बाजे सुघर बजावहीं गावैं होरी राग ॥ ४८० ॥
करत केल कौतुक अधिक अबिर गुलाल उड़ाय ॥
नन्द धाम पहुँचो सकल सुधि पाई ब्रजराय ॥ ४८१ ॥

हलधर ग्वाल बुलाय सब बाहिर आय गोपाल ॥
होरी खेल मच्यो अधिक दुक दिशिनर दुक बाल ४८२
पिचकारी रँग सों भरैं मृगमद कुङ्कुम घोर ॥ ॥
झोरिन अबिर गुलाल उड़ अरस परस झक झोर ४८३
रही घटा घन छाय छबि नहिं केसर की कीच ॥
कोउ पकरत कोउ भाजि छुट निलज गारि मुख बीच ४८४
पकरन हित नँद नन्द के ओचकि धाईं बाम ॥
भाजि गये छुर छुन्द करि लिये पकरि बलराम ४८५
ढोरि रंग शिर भांड मुख काजर दुगाहिं लगाय ॥
फगुवाले मन भावतो छाँड़े बिनय कराय ॥ ४८६
हँसत सखन मिलि साँवरो दाऊ आरि अँजाय ॥
युवतिन हलधर सैन पुनि पकरे मोहन धाय ४८७
सिमटि सखा छुट वन चले सखिन मार दिये टारि
लै आईं प्यारी निकट मुदित निरखि ब्रज नारि ४८८
कहैं कहो कैसी बनी मोहन नन्द किशोर ॥ ॥
चीर हरण को दांव अब लेहिं बसन पिय छोर ४८९
काल्हि कह्यो करिहो कहा बहुते गाल बजाय ॥
लगी बजावन बाँसुरी छोरी तिय मुसकाय ४९०
एकलियो हरि पीत पट चन्द्रावलि गहि हाथ ॥
काजर ला सखि आवली प्रेम प्रीत के साथ ॥ ४९१
ललिता लै लोचन दियो श्रवणन कहि दुक भाग ॥

इक गहि चिबुक उठाय मुख परस कपोल सभाग ४९३
काहू कबरी गूंथ शिर मोतिन मांग सुधार ॥
पहिरावत लहँगा कोऊ कोउ अँगिया उरधार ४९४
निरखत छबि प्यारी हँसैं कृष्ण बड़ाई दारि ॥
लावै ठाढ़े पिय निकट बधू बधू कहि भारि ४९५
मुदित प्रियाप्रिय मुख निरखि पिया रहे सकुचान ॥
पुनि प्यारी निज पाणि ले पिय को दीन्हों पान ४९६
गाँठि जोरि अञ्चर दई सखियन सहित कलोल ॥
कहैं रहो ब्रज में सदा जोरी युगुल अडोल ४९७
लिये मध्य घन श्याम को मगन बाल चहुं ओर ॥
अरस परस दोउ मुदित छबि राधा नन्द किशोर ४९८
गारी गावैं नन्द को आनन्दित ब्रज नारि ॥ ॥
बजत मँजीरा तारि डफ़ रवेल केल सुख सारि ४९९
ललिता को बोल्यो भवन यशु मति करि सन्मान ॥
ल्यावहु अब घर लाड़िलो कीरति जू की आन ५००
ललिता राधेहि ले चली निकट यशोमति माय ॥
सकुच मान नँदलाल तब छूटे हा हा खाय ॥ ५०१
हँसे ग्वालतिय रूप लखि भुज गहि चले लिवाय ॥
देखि हमें नँद राय जू हर्ष माय उर लाय ॥ ५०२ ॥
किन कीन्हे ये हाल ही ऐसी ब्रज की बाल ॥
सकुचित ही भोरे भये मन मन हँसत गोपाल ५०३

कियो दूर तिय रूप ही धर्यो श्याम निज रूप ॥
मुकुट शीश कटि पीत पट शोभा सरस अनूप ५०३
सखिन सहित कीरति कुंवरि यशु मति भवन पधारि
नँदरानी सब कूं दिये भूषण बसन अपारि॥ ५०४
प्यारी को निज हाथ सों हित करि कियो शिंगार ॥
निरखि भई बलिहार पुनि राई लोन उतार॥ ५०५
सादर सब की गोद भरि मधु मेवा अरु पान ॥
फगुवा कहा सो दीजिये यशु मति बचन बखान ५०६
ललिता कहि नहिं और कछु कान्हरही को लेहिं॥
देखन कूं पुनि जो चहो सो हय माँगो देहिं ॥ ५०७॥
बढ़ो बंश नंद राय को जिवहु श्याम बलराम ॥
जिनते ब्रज यह सुख लहै मुदित अशीशत बाम ५०८
चले न्हान श्री यमुन तट मिलिकें गोपी ग्वाल ॥
सुखद छाड़ि शीतल तहाँ रच्यो डोल नँदलाल ५०९
झूलत दोऊ रँग भरे गावत मिलि नर नारि॥ ॥
कियो दूर श्रम रवेल को यमुन केल सुख सार ॥५१०
महि देवन शिर तिलक करि पायो बहुविधि दान ॥
आनँद भरि वर्षै सुमन सुरगण गगन बिमान॥ ५११
लूट फाग सुख श्याम सँग पूरण ब्रजजन काम ॥
मुदित गये निज निज सदन घर आये घन श्याम ५१२
सुखद चरित नँदलाल के हरि भक्तन सुख दैन ॥

हरिपद रति पद पाइये सुन गावैं दिन रैन ॥ ५१३॥

विद्याधर शापमोचन॥

दीन दयालु कृपालु चित भूमि उतारन भार ॥
भक्तन हित युग युग सदा धरत मनुज अवतार ५१४
यश पुनीत पावन परम गावैं सुर मुनि संत ॥ ॥
कर्ता हर्ता आप हरि लीला सुखद अनन्त ॥ ५१५।
हरि प्रेरित नँद राय जू लीन्हें संग अहीर ॥ ॥
सादर शंकर पूजि सब रहे सरस्वती तीर ॥ ५१६॥
गह्यो पांव नँदराय को अजगर आधी रात ॥ ॥
ब्रजबासी हारे सकल छुटवत नाहिं छुटात ५१७
कृष्ण कृष्ण गुहराय सुरव अति आकुल नँदराय॥
भय व्याकुल ग्वालन तुरत दीन्हें श्यामजगाय ५१८
निकट जाय परसाय पद पाय शाप करि नाश ॥
दिव्य रूप तजि व्यालतन गायो गुण सुखराश ५१९
देखि नंद अचरज भये पूछ्यो सबहीं भेव ॥
शाप अंगिरा पुनि कृपा परसन पद हरिदेव ५२०
विद्याधर वरदान कियो पुनि प्रभु पद शिर नाय ॥
गयो लोक निज हर्ष उर गावत यश ब्रजराय ५२१॥
नन्दादिक आनन्द सब तहां भई निशा बीत ॥
हरि गुण गावत परस्पर महिमा देखि पुनीत ५२२
भात होत आये सदन संग श्याम बल राम ॥ ॥

यश पुनीत ब्रजराज को फैलि रह्यो ब्रजधाम ५२३॥

॥ पांवचूड़ ॥ वृषभासुर ॥ केशी ॥ व्योमासुर वध ॥

पांव चूड़ कूं मारि हरि गोपिन लियो छुड़ाय ॥
हरण सकल भयभोरजन दुष्ट दलन ब्रजराय ॥ ५२४
वृषभासुर सों युद्ध करि पल में कियो विनाश ॥
जै जै करि बर्षे सुमन सुरगण चढे अकाश ॥ ५२५
अश्वरूप आयो असुर केशी ता को नाम ॥ ॥
ताके मुख करनाय हरि कियो दनुज को काम ५२६
धनि धनि हरि ब्रज अवतरे भक्तन के हितकार ॥
गावत यश सुर मुदित नभ ब्रज घर घर नरनारि ५२७
व्योमासुर बन आय कै ग्वालन लियो चुराय ॥
देखि कपट घन श्याम ने झट पट पकर्यो धाय ५२८
पटकि भूमि बिन प्राण करि पठे स्वर्ग को दीन ॥
बालक शोधन हरि चले मिल नारद पर बीन ५२९
लगे बजावन बीन ऋषि गावन यश विस्तार ॥
कंस मारि अब कीजिये दूर भूमि को भार ॥ ५३०
ऋषि मुख सुनि सब ही कथा सुधा बचन मुख बोल।
जाउ बेगि सुनि लेहु मोहिं नृप काहि मधुपुरि बोल ५३१
करि प्रणाम हरि को चले ऋषि नारद हर्षाय ॥
जो बानी ऋषि कहि गये हलधर वही सुनाय ५३२
अविनाशी अद्वैत तुम अविगति अरु अविकार॥

अखिल लोकनायक लियो जन्म उतारन भार ५३३
संकर्षण के बचन सुन हँसि बोले घन श्याम ॥
जो तुम कह्यो सो सत्य है करूं कंस को काम ५३४
बालक लाये रवोज हरि भरे परम आनन्द ॥
साँझ समय आये सदन जग बन्दन नँदनन्द ५३५

अक्रूरआगमन॥

मुख उदास कछु मारि मन गये ऋषी नृप पास ॥
वरणेगुरा नंद नन्द के उपजायो उर त्रास ॥ ५३६॥
कंस राय निश्चय कियो ऋषि मम हितहि बखान ॥
मथुरा बेगि बुलाय हूं राम श्याम जिय ठान ॥ ५३७
पर्यो शोच उरमें यही मारों यहां बुलाय ॥ ॥
चढ़ि धाऊं ब्रज करत मन हरि गुरा समुझि डराय ५३८
आतुर ह्वै अक्रूर कों बोलि निकट रख कान्ह ॥ ॥
कह्यो भेद जिय को सकल खोले सबै बृतान्त ५३९
मन मन कहि अक्रूर यह भावत कहा भुवाल ॥
करि बिचार बुल वत निकट आपहि अपनो काल ५४०
कहि न सक्यो कछु नृपति डर कह्यो धन्य महाराज ॥
नन्द सुवन दोउ शत्रु हैं करहु बेग यह काज ५४१
शुफल्क सुत के बचन सुनि हर्ष्यो जिय अधिकात ॥
मनो करत बीती नहीं नृप को आधी रात ॥ ५४२॥
शुफल्क सुत घर को गये पर्यो सेज नृप राय ॥

लगी आँखि लखि सपन में कालरूप दोउभाय ५४३
झझकि उठ्यो भरम्यो नृपति भयो अधिक भय भीत
घर आँगन बैठत उठत कीनी निशा व्यतीत ५४४
पठऊँ ब्रज अक्रूर कों करि बिचार नृप जीय ॥
क्षण क्षण युग बीतत कठिन धरत धीर नहिं हीय ५४५
इत देख्यो नँदराय जू सपन कहत ब्रज लोग ॥
श्याम राम ब्रज तजि गये रोवत बिरह वियोग ५४६
जागि झझकि धक धक हृदय ढारत नयनन नीर ॥
कह्यो न यश्रु दहि भेद कछु श्याम देखि उर धीर ५४७
प्रातहि नृप अक्रूर कूं सादर निकट बुलाय ॥
शिरोपाव पहिराय निज दीन्हों रथ पल नाय ५४८
रथ चढ़ि ब्रज सन्मुख चल्यो शीश नाय अक्रूर ॥
नृप ने तहँ जोरे सकल मल्ल असुर रण शूर ५४९
रंग भूमि रचना रच्यो सावधान सब कोय ॥
मोंहित एक मचान हू रच्यो जो ऊंचो होय ५५०
एक पौर गज कुवलिया धनुष दूसरी ओर ॥
रखवारे बहु भट तहां सजग बली बहु ठौर ५५१ ॥
दोउ बालक आवें जबै कहियो धनुष उठाय ॥
घेर मारि लीजो तहां भीतर चलन न पाय ५५२
जो कदापि वह ते बचें तौ गज चरण रुंदाय ॥
रंग भूमि आवें नहीं मल्लन कहत सुनाय ५५३

जेहिं तेहिं विधि मारो उन्हें और न दूजी बात ॥
गयो सदन नृप सबन दे आयसु मनहि डरात ५५४
नगर निकसि ठाढ़ो कियो रथ अपनो अक्रूर ॥
पखो प्रोच कछु भ्रमित पुनि सुमिर कृष्ण करिदूर ५५५
अखिल जगत कर्तार हरि पालन अरु संहार ॥
भूमि भार टारन प्रगट गुप्त रूप अपार ५५६
जाय रूप वह देखिहौं धन्य जो अपने नैन ॥
धन्य कंस जो मोहिं ब्रज पठयो हरि को लैन ५५७
हाँक्यो रथ अक्रूर ने यह विचारि उर धार ॥
सुभ गरा दाहि न शुभ सगुन पायो हर्ष अपार ५५८
कृष्ण दरश अनुराग अति मगन भयो मन ध्यान ॥
भूलि पन्थ भटकत फिरत सुधि निज देह भुलान ५५९
भक्त वच्छल हरि बिरद हे घट घट जानन हार ॥
भक्त भाव बसि बिलम तजि दियो दरश सुख सार ५६०
मधुर बचन पूछ्यो कृपाल मन चीतो करि पूर ॥
प्रगट भेद नृप कंस को कह्यो कछुक अक्रूर ॥ ५६१
सुनि बानी अक्रूर की मुसकाने नँद लाल ॥
असुर दलन भू भार हरि फरकी भुजा गोपाल ५६२
परम प्रीत हलधर मिले शुफलक सुत आनन्द ॥
युगुल रूप निरखत भयो बासु देव जग बन्द ५६३
हमें बुलायो कंस ने कहि कहि उठत गोपाल ॥

सुन सुन होय चकित सबै दृगन नीर तहँ ग्वाल ५६५
निरख सरवन सुख हँसि कह्यो करो न जिय कछु संत
चल्यो कालिंह सब देखिये मधु पुरि राजा कंस ५६५।
ग्वाल सरवन रथ डोर ही लीन्ही अपने हाथ ॥
सुफलक सुत की गोद चढ़ि ब्रज आये ब्रज नाथ ५६६
सादर मिल नँद राय जू कुशल प्रश्न करि नेह॥
विविध भाँति भोजन दियो लाये अपने गेह ५६७॥
सुफलक सुत जेंवत लिये श्याम राम दोउ संग॥
हरि द्रुत उत चितवत नहीं नर नारी लखि दंग ५६८
उठे ऊँचे दै पान पुनि सादर पलँग बिठाय ॥ ॥
कहा कृपा द्रुत पग धर्यो पूँछत श्री नँद राय ५६९
नृप जिय अति अभिलाष हे देखन चाहत नैन ॥
चल्यो संग ले प्रात ही श्याम राम गुण ऐन ५७०
चकित नन्द यशुमति चकित सुन सुन सब ब्रजलोग
अति आकुल हिय धक धकी बिछुरन कृष्ण वियोग ५७१
सुफलक सुत दोउ मिल रहे लखैं न सुखसों बोल॥
नर नारी पोचत बिकल ठाढ़े सकल अडोल॥ ५७२
कहन लगो अक्रूरयों मति डरपो मन माहिं ॥
यज्ञ काज भञ्जन धनुष राम श्याम भय नाहिं ५७३
श्री यशुमति व्याकुल महा कठिन व्यथा उर पीर॥
बिलप कहत अक्रूर सों ढारत नयनन नीर ॥ ५७४॥

मेरे सुत अज्ञान हैं धनुष देखिव कह जान॥ ॥
कियो कपट कछु नृपति ने मो कों परतपिछान ५७५
महं तारी कूं दुरिवत करि क्यों मोहन घनश्याम॥
मथुरा जाउ न लाड़ले कहा तुम्हारो काम ५७६
परी धरणि मुरझाय यों यशुमति बचन सुनाय॥
मोहि तजि करि सूनो भवन निठुर होत ब्रजराय ५७७
घरहू आवत नाहिं हरि मिल बैठे अक्रूर ॥
को राखे कासूं कहूं यशुमति कहत बिसूर ५७८
धृग जो रहें अब प्राण तन कहें यही ब्रज बाम ॥
अहो दई कैसी करी चलन चहत घन श्याम ५७९
करि बिचार नन्दादि सब करिये कहा उपाय॥
को जाने नृप मन कहा आयसु मेटि न जाय ५८०
वृद्ध गोप बोलत भयो हरि प्रभाव जिय जान ॥
कहे श्याम सोदू कीजिये गर्ग बचन परिमान ५८१
सुमिरत गुण नँदलाल के महिमा अमित बखान
कितिक धनुष अरु कंस हरि करि हैं निज मन मान ५८२
नृपति जो कछु करि है कपट हरि सामर्थ्य अपार॥
काल हू के ये काल हैं हल धर नन्द कुमार ५८३
सुनत बचन हरि गुण समुझ हर्षे सबे अहीर ॥
सब नायक दोउ बीर हैं यहै जानि धरि धीर ५८४
बार बार यशुमति कहति अब हीं बारे कान्ह॥

मधुपुरि ह्वयारे बसत मल्ल महा बलवान ५८५
हलधर क्यों नहिं भ्रात कों समुझावत हो लाल॥
रहे कौन बिध प्रान तन तुम बिनु जननी काल ५८६
कहत राम सुन मात तू मतहि कंस भय मान ॥
बारे समुझत न कान्ह कों करि बिचार जिय जान ५८७
तो देखत हनि पूतना शकट तृणा बक मार ॥
अघ अरिष्ट केशी दुरवद वत्सा असुर पछार ५८८
विष जल ते गौ ग्वाल रवि गोवर्द्धन कर लीन ॥
महा प्रलय जल इन्द्र को कोप निवारन कीन ५८९
तू कत शोच करत वृथा हरि सम बली न और॥
धरो धीर रैहैं बहुरी क्यों नयनन जल ढोर ॥ ५९०॥
सुनि चरित्र जिय कहत यों जो कछु करैं सो होय॥
मैले जै हों संग निज कह्यो नन्द पुनि सोय ॥ ५९१॥
धनुष यज्ञ दिरवाय पुनि ले ऐ हों दोउ भ्रात ॥
ऐसें हि सब को बीतनिशि ह्वै आयो पर भात ५९२

मथुरा को गमन॥

हरि आयसु अक्रूर ने लीनो रथ पल नाय ॥ ॥
परी धरनि बिलपत बिकल कहति यशोदा माय ५९३
बिरध समय की लकुटिया श्याम राम दोउ बीर॥
सुफलक सुत लै जात हरि धर्म छाँडि नहिं पीर ५९४

ब्रज बनिता गद गद बचन दृगन नीर बिलखान ॥
लियें जात अक्रूर अब हमरो जीवन प्रान ॥ ५९५॥
पाँय परम हरि रारिवये सनय चूक पछिताय ॥
करों बीनती श्याम सों रो मरि हें दुख पाय॥ ५९६॥
बिरह बिकल लखि गोपिकन चितै कमल दल नैन॥
डारिठगोरी मृदु हसन चितवत खरी अबैन ५९७॥
तेहिं अवसर प्रभु रथ चढ़े मुफलक सुत चढ़िधाय
पुत्र पुत्र टेरन लगी देखति यशुदा माय ५९८॥
लेउ लाल दृक बार पुनि जनम खेर तन हेर ॥
बहुरि किये तुम जाति हो ब्रज में श्याम अँधेर ५९९
माय यशो मति बिकल लखि देख दुखित ब्रजलोग
बहुरि मिलन श्री मुख बचन दियो धीर सुख योग ६००
भूमि उतारन भार हरि चितै मधु पुरी ओर ॥ ॥
रथ हांकन अक्रूर सों सैन नैन की कोर॥ ६०१॥
बार बार यशुदा कहत बिलखि बिलखि तेहिकाल
हितू कौन ब्रज या समय राखै चलत गोपाल॥ ६०२
यह कहि महि लोटत बिकल ओर दुखित ब्रजबाल
रहीं देख टकलाय रथ मथुरा गमन गोपाल॥ ६०३
गयो दूर रथ धूर हू भई दृगन की ओट ॥
कहा करें घर जाय कहि परीं मुरछि महि लोट ६०४
बिरहा रस मातीं बिकल कहन लगीं मुख बात ॥

दियो न क्यों बिधिना हमें पवन धूरि को गात ६०५
कै हम को करतो कछू रथ ही को कोउ अंग ॥
तौ सुरेव न जाती चलीं नद नन्दन के संग ६०६
हरि बिनु ब्रज सूनो भयो दुरव माने धुनि माथ॥
ह्वै अजान काहू न रथ गह्यो चलत में हाथ॥ ६०७
यों ब्रजतिय पछिताय मन लाईं यशु दहि गेह॥
हरि बिनु परम उदास सब मुरव मलीन कृश देह ६०८

अक्रूर शोच निवारण॥

चले नन्द गोपन सहित ग्वाल सरवन बहु भीर॥
शोच विवश अक्रूर उत पहुंचे यमुना तीर ६०९
धृग धृग अपनी बुद्धि कों कहि कहि मन पछिताहिं॥
लिये जात हूं कंस पे प्रयाम राम भलि नाहिं॥ ६१०
भक्त हृदय संशय जबै जान्यो प्रयाम सुजान॥ ॥
हमें कलेऊ देउ पुनि तात करो अस्नान॥ ६११॥
यह कहि हरि कौतुक जगट महिमा अमित अनूप
दिखवायो अक्रूर को जल में अपनो रूप॥ ६१२
नाशी चिंता चित्त की बाढ्यो मन आनन्द॥ ॥
लग्यो करन अस्तुति तहाँ करि बरवान रचि छन्द ६१३
हूं अजान जगदीश हरि तुव गुण रूप अनन्त॥
करि अस्तुति चरणान परयो मोह रहित निश्चिंत ६१४
अन्त रहित जल में भये लीला सागर प्रयाम॥

जब जलते बाहिर निकस सुफलक सुत अभिराम ६१५
हर्ता कर्ता जगत के श्याम राम सुख राश ॥ ॥
कहत मनहिं मन हर्ष उर करैं खलन को नाश ६१६
ये हरि पूरण ब्रह्म हैं दून सम और न आन ॥
कहा कंस कहा कुबलिया कहा मल्ल बलवान ६१७
चल्यो हांकि रथ हर्ष अति आनि मिले तब नन्द ॥
प्रथम शोच आनन्द अब बूझ्यो श्रीनंदनन्द ६१८
कहन लग्यो बूझ्यो कहा श्रीपति त्रिभुवननाथ ॥
दुष्टदलन सज्जन सुखद निगम नेति गुण गाथ ६१९
नगर निकट पहुंचे दोऊ रथ बैठे छबि छाज ॥
कंस दूत नृप सों तबै कह्यो जो आये राज ॥ ६२० ॥
रंग भूमि महलन गयो समाचार सुनि कान ॥ ॥
सुभट मल्ल बहुतिक असुर ठाम ठाम सजि गान ६२१
आवन नन्द कुमार को पर्यो नगर में प्रोर ॥
सुनि धाये नर नारि सब देखन कूं चहुं ओर ६२२
कियो प्रवेश नगर जबै राजत रथ दोउ बीर ॥
नारिन लरिव चढ़ि चढ़ि अटा रथ मंग पुरजन भीर ६२३
देहिं अशीश मनाय सुर निरख रूप नर नारि
करे जो नृप इन सों कपट तो ह्वै है जरि छारि ६२४ ॥
मन भावन यों दे दरश उतरे बाग मंझारि ॥
गोप सखा नन्दादि सब राखे तहां मुरारि ६२५

हरि आयसु अक्रूर तब गये नृपति के पास ॥
ग्वाल बाल बलराम सँग मोहन सहित हुलास ६२९
गये यमुन तट मुदित हरि बाल केलि के सँग ॥
लजि अनङ्ग कोटिक निररव गोर श्याम छबि अंग ६३०

रजक बध ॥ धनुष भञ्जन ॥ कुबलिया बध ॥

प्रथम जाय लूटे बसन कीनो रजक निहाल ॥
आप पहिर ग्वालन दिये आगे चले गोपाल ६२८
मिलो एक सूजी तहां चररा कमल धरि माथ ॥
घाट बाढ़ि सम करि बसन पहराये ब्रजनाथ ६२९
ताको कृत प्रभु मानि मन दियो भक्ति को दान ॥
माली पूरण काम हरि पहरि हार हर रवान ॥ ६३०
कुबजा सों चन्दन लियो दीनो रूप अनूप ॥
भई रूप गुण आगरी मोही श्याम स्वरूप ॥ ६३१ ॥
सहजहि करि भञ्जन धनुष असुर मारि नँदलाल ॥
लीने दन्त उखारि पुनि हन्यो कुबलिया व्याल ६३२

मल्लयुद्ध ॥ कंस को हनन ॥

हिरद दन्त धरि कंध निज श्याम राम दोउ बीर ॥
चले जहाँ जुरि मल्ल सब गोप बाल सँग भीर ॥ ६३३
यथा भाव दरशो सभन रंग भूमि प्रभु जाय ॥ ॥
कम्प उठ्यो भय भीत नृप काल रूप दरशाय ६३४
लिये घेर चहुं ओर सों असुर भीर दोउ लाल ॥ ॥

बोल उठ्यो चारूर हँसि आवहु मदन गोपाल ६३५
करि बरवान तुम्हरो जगत सुनत रहे हम नाम ॥
लरो अखारो आज हरि परयो जो हम सों काम ६३६
हमें खेल सों काम है बाल वेष हम देख ॥ ॥
अस्तु गति यह व्योहार है और आपनी पेष ॥ ६३७
जान देउ रोकत वृथा हम को नृपति बुलाय ॥
ठाढे असुर समूह मधि यों कहि श्याम सुनाय ६३८
मल्ल युद्ध तुम सों लरें करें नृपति को काज ॥ ॥
ऐसें हरि सों कहत सब सजें युद्ध को साज ॥ ६३९
लपट झपट भुज सों भुजा शिर सों शिर दृग जोर ॥
हलधर संग मुष्टिक भिरो हरि चारूर कठोर ॥ ६४०
गहन घात पावें नहीं छूटत पुनि लपटात ॥ ॥
मल्ल तिन्हें चाहत गहन शिवविधि गहे न जात ६४१
मल्ल युद्ध जीतें कुँवर परयो कटक में शोर ॥ ॥
जिमि उडगण रवि उदित ही छिपे असुर सुरव मोर ६४२
मल्ल मारि राजत खरे रंग भूमि दोउ बीर ॥ ॥
देखि कंस भय भीत अति कंप गात नहिं धीर ६४३
देन लग्यो सेनापतिन क्रोध सहित सुरव गार ॥
कितहि गये योधा सकल हतें जो नन्द कुमार ६४४
तनक को हरन बहिरके मल्ल दिये सब मार ॥ ॥
भय गजि दूत आवत चले मारो कहत पुकार ६४५

नृप भय धाये असुर सब अस्त्र शस्त्र करि पानि ॥
लखि पुरजन व्याकुल महा मन में अधिक डरानि ६४६
आवत लखि असुरन भिरे हांक मारि दोउ वीर ॥
गज गरजा के ऊपर परे ज्यों केहरि मति धीर ॥ ६४७
सुन्यो शब्द गम्भीर हरि सेनापति हिय हारि ॥
क्रोध युक्त बल लपक गहि पटक पटक महि मारि ६४८
चटक गहन धावन चपल असुरन पटकि पछार ॥
दुष्ट दलन कौतुक अमित हरत भूमि को भार ६४९
चहूँ ओर खल भल पर्यो भय व्याकुल नृप कंस ॥
कीजे कहा उपाय अब बढ्यो अधिक उर संस ॥ ६५०
क्षण बैठत क्षण उठत नृप दियो धीर सब डार ॥ ॥
मारे सकल असुर दोउ हलधर नन्द कुमार ॥ ६५१
पुनि सकोप नृप ओर लखि चढ़ि गये मचकि मचान ॥
बाज झपट देखत सकल चकृत कंस भयमान ॥ ६५२
मारि लात घन श्यामने भूपर दियो गिराय ॥ ॥
तापर कूदे आप हरि सुन्दर रूप दिखाय ॥ ६५३ ॥
सो स्वरूप दे कंस को पठे स्वर्ग हरि दीन ॥ ॥
मर्यो कंस हरषित सकल जै धुनि सुरगण कीन ६५४
अष्ट भ्रात नृप राय के धाये लरन सकोप ॥
ने सब श्री बलदेव जू कीने तहां अलोप ॥ ६५५
श्याम केश गहि कंस को दियो यमुन जल डारि ।

नाम घाट विश्राम परि करि बिश्राम मुरारि ६५६॥
गये तहां दोउ भ्रात पुनि जहां हुतो रनिवास ॥
विविध भांति समुझाय हरि रानिन दियो दिलास ६५७
उग्रसेन पुनि आय मिल रारि व चरण पर शीश ॥
दीन बचन सुनि हर्ष अति कृपा करी जगदीश ६५८
उग्रसेन राजा कियो निज कर चमर डुराय ॥
युग युग प्रभु भक्तन सुखद जन को देत बड़ाय ६५९
लरि व लरि व सुख पायो सकल श्री मथुरा नर नारि
अब दैहैं पितु मातु सुख घर घर यही बिचार ६६०
कंस मारि महि भार हरि उग्रसेन दै राज ॥ ॥
मात पिता की सुरत करि तब बोले ब्रज राज ६६१
उग्रसेन अक्रूर युत सँग ही गये लिवाय ॥ ॥
दियो दरश पितु मातु को जनम समय दरशाय ६६२
मिले धाय पितु मातु सों कहि हम सुवन तिहार॥
आये मल्ल पछारि सब कंस मारि भय टार ॥ ६६३॥
यह कहि श्री मुख सुख दियो पग बन्धन दिये काढ़ि॥
तब दम्पति निश्चय कियो अति आनन्द उर बाढ़ि ६६४
कराठ लपट रोवन लगीं कहत देवकी माय ॥
द्वादश बर्ष रहे कहां में नहिं गोद खिलाय ६६५
भये प्रेम वश दुखित लखि मातु बचन करि कान॥
लिखो मिटे नहिं कर्म को बोले अति सकुचान ६६६

मति कर मात बिषाद चित अब पुरवैं मन साध ॥
कहन लगे श्री मुख वचन करुणासिन्धु अगाध ६६

श्री बसुदेवजी महजन्मोत्सव ॥

पुत्र जनम जगमें सुखद तुम कों भयो कलेश ॥
वृथा जन्म है तासु को पिता मात दुखदेश ६६८
सो अब दोष न मन धरो होन हार बलवान ॥
तजो शोक आनन्द उर सुफल मनोरथ मान ६६९
पुत्र बचन सुन मात अति उर आनन्द बढ़ाय ॥
बार बार गहि तात को लैलै कराठ लगाय ॥ ६७०
हर्षित ह्वै वसुदेव जू बोल बिप्र परि पाय ॥ ॥
जन्म समय संकल्प करि दई लक्ष ते गाय ६७१
बन्दीजन आये सुनत पायो बहु बिधि दान ॥
श्री बसुदेव उछाह मन परि तोषे सन्मान ६७२ ॥
कियो जन्म उत्सव तहां गाये मङ्गल चार ॥ ॥
द्वार द्वार बाजन बजे पुरजन हर्ष अपार ॥ ६७३ ॥
करि शिंगार गावें मुदित साजें मङ्गल थारि ॥ ॥
आवैं श्री बसुदेव गृह उमगि उमगि सब नारि ६७४
ले ले आवें भेट सब भई भवन अति भीर ॥ ॥
नाचत नट गावें गुणी झुरमुरत पुलकि शरीर ६७५
तब जननी रोजसुतन करि उबटन अन्हवाय ॥
निज कर अंग अंगोछ पुनि सरस शिंगार सजाय ६७६

हुते ग्वाल जे संग हरि तिन्हें देवकी माय ॥ ॥
जानि कृष्ण प्रीतम सबै निज हाथन पहिराय ६७७
ग्वाल बाल चकित सकल लखि मन करत बिचार
कृष्ण देव की पुत्र हें नाहि न नन्द कुमार ६७८
चौक बैठि दोऊ कुँवर विप्र वृन्द तहं आय ॥ ॥
बिधिवति पूजा तिलक दियो बहुतिक दान सुहाय ६७९
मात उतारें आरती लखव छबि सुरव नर नारि ॥ ॥
सहि देवन करि बेद धुनि न्योछावर विस्तार ६८०
विष्णु सहित सुर यश कहें वर्षें सुमन सुहाय ॥
बाजि रहे नभ दुन्दभी जय जय जय सुख गाय ६८१
बहुरो सरवन सहित दोउ निज कर परस जिमाय ॥
पूरि सकल मन कामना मात निरखि बलिजाय ६८२
मात पिता कूं सुरव दियो यहिं बिधि कंस निपात ॥
घर घर श्री मथुरा पुरी लघु दीरघ हर्षात ॥ ६८३
फैल्यो यश तिहुं भुवन में पावन परम रसाल ॥
जल थल सुर नर नाग सब जीवन भये निहाल ६८४
मारन कंस पुनीत यश गावैं सुनैं जो नित्त ॥ ॥
सुफल होहिं मन कामना कृष्ण चरण रति चित्त ६८५
अनुदिन गावैं हरि कथा नर तन पाय सुजान ॥
सुन्दर यश ब्रज चन्द को सकल सुरवन की खान ६८६

कुबजा गृहगमन॥

दीन बन्धु भक्तन सुखद यदुपति जन हित कार॥
नृपति भवन तजि के चले कुबजा सदन पधार ६८७
नारि पुरुष नहिं भेद कछु ऊंच नीच नहिं मान॥
विवश बिकाने हाथ जेहिं सांच भाव जिय जान ६८८
टेढीतें सूधी करी दीनो रूप अनूप ॥ ॥ ॥
दासी ते रानी भई पति पायो ब्रज भूप॥ ६८९
कुबजा प्यारी कृष्ण की घर घर होत बखान॥
ताकी भाग्य सराहना करि सुरनारि सिहान ६९०
बसे श्याम कुबजा सदन पूरण सब मन काम॥
पुनि आये बसुदेव गृह करि बिचार घनश्याम ६९१
ब्रज बासिन की सुरति करि लिये संग बसुदेव॥
गये जहां नृप राज हीं श्री मोहन बल देव॥ ६९२
तहां जुरे यादव सकल हरि यों बचन सुनाय॥
ब्रज बासिन कों कीजिये अब चलि ब्रजहि बिदाय ६९३
सुन्यो नन्द गोपन सहित हत्यो कंस दोउ भ्रात॥
सांचि न माने मन कछू ब्रजा भाव डर पात ६९४
श्याम राम आये नहीं शोच करत मन माहिं ॥
मोहन बलदाऊ बिना अब कैसें ब्रज जाहिं ६९५

नन्द जीकी बिदा॥

नृप बसुदेव सहित तहां आ पहुंचे दोउ भाय ॥

धाय मिले उठि नन्द जू लीन्हे कण्ठ लगाय ६९६
उग्रसेन बसुदेव सों मिले हरष युत नन्द ॥
यादव गण मिल बैठहीं दोउ कुवँर ब्रजचन्द ६९७
देखें ठाढ़े गोप सबन हीं श्याम वह भाव ॥ ॥
चलत बेग अब ब्रजन को नन्द मनहिं अकुलाव ६९८
तोरी हम सों प्रीति हरि सब हम मन दरशाय ॥
प्रीति बिवश बोले न कुछु रहे श्याम सकुचाय ६९९
पुनि श्री मुख बोले बचन यदुपति शोच बिचार ॥
बहुते तुम हित चित कियो पालन पोष हमार ॥ ७००॥
मोसों कहत कि आन सों झझकि उठे नन्द राय॥
ढारि सकत नहिं नयन जल गह बर हियो भराय ७०१
मधुर बचन हरि बोल यों सुनहु तात यह बात ॥
तुम नहिं निश्चय कीन सो कियो गर्ग विख्यात॥ ७०२
पुत्र हेत प्रति पार कीर कीनो बिविध दुलार ॥
गये इते दिन बीत ब्रज हँसि हँसि खेल मझार ७०३
हम कों जो तुम सुख दियो तुम सम मायन बाप॥
जहां रहें तुम्हरे सुवन मो बिनु ब्रज हि बिलाप ७०४
तातें जाबहु बेग ब्रज दीजे सब को धीर ॥ ॥
यशुमति सों करि बीनती कहो यही बलवीर ७०५
पुत्र हेत गहियो सदा उरने सुरत न टार ॥ ॥
मैं तुम ते नाहिन कभू जननी नेक नियार॥ ७०६

भये बिकल अति नन्द जू निठुर बचन सुन श्याम।
सखा गोप चकित रहे जो वत मुख सुख धाम॥७०७
धाय नन्द चरणन परे यह मति कहो गोपाल॥
तुम्हैं छाँडि जाँऊन ब्रज कहत रोय बेहाल ७०८
चलो बेगि ब्रज साँवरे क्यों करि रहे अबेर॥ ॥
मग जोवत है हे तहां जननी करि अवसेर ७०९
सद मारवन तुम हेत मथि है हे सखि गोपाल
कहो सो तुम बिनु कौन को माता दै हे लाल ७१०
हरि प्रताप जान्यो न हम द्वादश बर्ष बिताय॥
अब प्रगटे बसुदेव सुत निठुर मधु पुरी आय ७११
क्यों हम हित मारे असुर दुखदारिद क्यों टारि॥
डारि दियो किन गिरि जबै दव मरते नरनारि ७१२
क्यों होती सो आज दिन तुम बिछुरन की पीर॥
कहत नन्द यों बिकल अति बहत दृगन सों नीर ७१३
मन सिहाहिं यादव सकल देख नन्द की प्रीति
कहि न सकत कोउ कछु सकुच प्रेम परतीति ७१४
मानो पन्नग के डसे व्याकुल सबहि गुवाल॥
ठाढ़े काढ़े चित्र से निरखत मुख नँद लाल ७१५
हलधर समुझावन लगे क्यों दुख पावत तात॥
कछुकि काज करि फेर ब्रज रैहैं दोऊ भ्रात ७१६
कह्यो गर्ग तुम सों सबै कारण करि विस्तार॥

भूमि उतारन भार हरि प्रगट धरणि अवतार ७१७
हमरे मात पिता नहिं तुम बिनु औरै कोय ॥
जहाँ रहें तुम्हरे हि सुवन काहि लावेंगे दोय ७१८
ह्वै है जननी दुरित अति तुम जाये धर धीर ॥
सुनि बाणी बलदेव की बोले नन्द अधीर॥ ७१९
मारि कंस सुर काज करि सुख दीनो वसुदेव ॥
मिल आवहु अब फेर ब्रज दोऊ हरि बलदेव ७२०
रोमें कहि व्याकुल महा गहे नन्द हरि पाय ॥
गद्गदहियमुख क्षीणा द्युतिमोदुखकिमकाहिजाय७२१
सखावृन्द अरु नन्द जू अपर सकल उप नन्द॥
अतिही विरह कादर निरख बोले श्री नँदनन्द७२२
ब्रजमथुरा कहा आंतरो नात काहि पछिताय ॥
कहा दूर तुमते काहूं प्रोचो मन समुझाय ७२३
देउ धीर ब्रज जनन को कह्यो बोध ब्रज नाथ ॥
जोरि हाथ तब नन्दने धरि आयसु निजमाथ७२४
प्रभु चाहो सोई करो तासों नाहिं उबार ॥ ॥
जैहों ब्रज तुम्हरे कहे बचन कौन बिधदार ७२५
नीच दशा ले ऊंच करि तुम प्रभु दे प्रभु नाय ॥
मोगवाँर पशु पाल को जगत धन्य यशगाय७२६
तुम प्रताप तिहुं लोक में विदित सुकृत की खान॥
सुर नर मुनि महिमा अमित सारवी वेद पुरान ७२७

बहुरि श्याम चररान परे रोमे कहि नँद राय ॥
कह्यो जान सनमान करि लीन्हे कृपा उठाय ७२८
कहन लगे बसुदेव तब बहु बिधि बिनती भाखि
आगे श्री नँदराय के बहुत सम्पदा राखि ७२९
यहां उहां नहीं भेद कछु अपनेहि करिके जान॥
राम श्याम बालक दोउ सब को सुखदीखान७३०
सो सँपति नँद राय जू करी न अंगी कार ॥ ॥
कर जोरें घन श्याम सों विनवत बारम्बार ७३१
कृपा सिन्धु रहियो सदा ब्रज पर परम कृपाल॥
कह्यो जान ब्रज सभन कूं बोधे कृपति दयाल७३२
गोप सखा सब बोध हरि सादर कीन विदाय॥
चले सकल ब्रज शोच बश हरि वियोग दुखदाय७३३

ब्रज वासिन को बिरह॥

लट पट परा मग चलत ही रही देह सुधि थोर ॥
ब्रज तन जात बिलोक हीं फिर फिर मधपुरि ओर७३४
भये बिरह बारिधि मगन रह्यो न काहू चेत ॥
ज्यों त्यों करि नियराय ब्रज उदासीन हरि हेत ७३५
गये सदन यादवन हित उत हरि जन हितकार॥
ब्रज वासिन के नेह को करि बरवान विस्तार ७३६
रहे जो सेवा रहित हम कहत नन्द पछिताय ॥ ॥
कर्म मन्द बन अति कठिन पठय चरावन गाय॥७३७

निकट बसत भूलो रह्यो चीन्हें नाहिं कृपाल॥
इन्द्र कोप गिरि धारि कर मम हित गये पताल७३८
अब नृप भय भयो लोभ बश पठै दिये दोउ भाय॥
समुझ नन्द कर तृप्ति निज मुरछि धरणि मुरझाय७३९
बलमोहन की सुरति करि जननी बाट निहार॥
आतुर आई दौरि तरि आवत सभन विचार॥७४०
धाई कनिया लेन को बत्स हेत जिमि धेन॥॥
ब्रजतिय धाईं हर्ष अति आश दरश सुख देन७४१
श्याम राम दोऊ कहां पूंछत यशुदा माय॥॥
नन्द नीर नैनन विकल रहि गये शीश नवाय७४२
देख नन्द गति विकल अति ब्रजजन बिन ब्रजनाथ
बदन गयो मुरझाय सब धुनत हाथसों माथ७४३
परे भूमि कहि टेर सब हरि बिसर्यो केहिं दोष॥
करि विलाप तहां नन्दसों यशुमति कहति सरोष७४४
ब्रजपग दीन्हों सुतन तजि धृग धृग पति कह कीन॥
सूझ पर्यो मग कौन बिधि फट्यो न क्यों हिय हीन७४५
बिछुरत आनँद कन्द के क्यों राखे तन प्रान॥॥
सुनी नहीं कहुं मंद मति दशरथ कथा जो कान७४६
मैं जा रहि हूं मधुपुरी ह्वै के हरि की धाय॥॥॥
यह ब्रज अपनो नन्द अब राखो ठोंकि बजाय७४७
ले गयो जीवन प्राण हरि वह बैरी अक्रूर॥॥

गई न संग जो में यहां रही मूढ मति क्रूर ॥७४८
जो जानती हरि संग ही क्यों हो तो यह काम ॥
श्याम राम कूं छांड़ हूं नहिं आवति ब्रज धाम७४९
भये भयावन धाम ब्रज मानौ बसे मशान ॥ ॥
पलटे गति जिमि देह की निकस जाहिं जब प्रान७५०
पूंछति यशुदा रुदन करि कहो नन्द समुझाय ॥
कह्यो श्याम मोहित कहा जब तुम कीन बिदाय७५१
तुम हूं चलती बेर पति विनती कछू न कीन ॥
अई बचन सुनि ह्वै बिदा उठ ब्रज को चल दीन७५२
जो चाहें सोई करें वे हरि त्रिभुवन राय ॥ ॥
में अपनो सो करि थक्यो कह्यो नन्द बिलखाय७५३
पुनि मिल हें कछु काज करि कह्यो श्याम बलराम
मोहि पठयो तुव हेत लगि कहि कहि अधिक प्रणाम७५४
तब मैं आयसु शिर धरी बचन सक्यो नहिं टार ॥
मिलन श्याम की आश पुनि यशुमति प्राण अधार७५५
ब्रज में ग्वालन घरन घर सो सब बरनि कीन ॥
रजक आदि हति कंस नृप मात पिता सुख दीन७५६
कुबजा को रानी कियो दे सुहाग ब्रज राज ॥ ॥
प्रगट नाम यदुपति जगत देख अहीरन लाज ७५७
गोपिन कुबजा नाम सुनि सोति डाह उरझाल ॥
ह्वै निराश कहि परस्पर मिटी आश नंदलाल ७५८

दासी को रानी कियो जाति पाँति नहिं चीह्न ॥
ब्रज नहिं ऐहे साँवरो तजे न नारि नवीन ॥७५९
शुफल्क सुत ब्रज आय जब लगे श्याम के कान॥
कुबज़ा मिस मधु पुरि गये लिये कंस के आन ७६०
कहन लगी इक सुन सखी हरि वे दिन बिसराय॥
घर घर मारवन चोर हम हित सों गोद खिलाय७६१
बड़े होन की आश हम देवनि हार निहोर ॥
बड़े होय यह सुख दियो गये कूबरी पोर ॥७६२
बालापन यशुमति सखी हारी लाड लडाय ॥
ताहि छांड अब देवकी पुत्र भये ब्रज राय ॥७६४
काग हेत पालन कियो पिक तजि कुल मन दीन॥
सो करनी घन श्याम ने महर महरि सों कीन ॥७६४
नृप आसन बैठे मुदित बहिरावैं ब्रज नाम ॥ ॥
सुनियत सुरभी चित्र लखि लजिया वत घन श्याम७६५
चपैं हमारो नाम सुनि निठुर भये बलवीर ॥ ॥
कुब्ज केलिरस बशि परे कहा हमारी पीर ॥७६६
नये मिले पितु मातु ह्वां नई कूबरी नारि ॥ ॥
नये सखा नव नेह अब क्यों ब्रज करैं सम्हारि७६७
जाति पांति हमरे नहीं हमै पेरखो कौन ॥ ॥
तिनको दुख माने कहा भये पराये जौन ॥७६८॥
नंद लाल अब श्याम कूं कहें न गोपी नाथ ॥

बासुदेव विख्यात जग यदु बंशिन के साथ ७६६
अब नाहिं न बन माल उर मोर पक्ष नहिं शीश ॥
पहर आभरण श्याम ने गुंज हार तज दीश ॥ ७७०
सर बसु भूल दियो सखी गृह बन की सब प्रीति ॥
रहीन पिछली सुरति कछु यह राजन की रीति ७७१
मुरली धुनि भई बावरी जब कीन्हें वे ढंग ॥
अब मन काकं जहाज को छुटे कौन बिध संग ७७२
लगी कहन इक सुन सखी अब ब्रज धनी न कोय ॥
जब कृपाल गिरिधारि कर किये सुखी दुख खोय ७७३
कियो पान दावा अनल अतुल प्रताप दिखाय ॥
ब्रजजन हित सुन्दर सुखद राखे जरत बचाय ७७४
अब समुझत सकुचत सखी यह लागो हम दोष ॥
बिछुरत फट्यो न क्यों हियो भये प्राण किन मोष ७७५
सुन्दर मोहन लाल बिनु लगे जान दिन रात ॥ ॥
रहत प्राण हम गात जो अधम हमारे गात ॥ ७७६ ॥
बिन वह मूरति साँवरी देखे कछु न सुहाय ॥
जरत बिकल बिरहा अनल तपत चन्द अधिकाय ७७७
होत भया वन रूप जिमि बिना प्राण की देह ॥
हरि बिनु तैसें देखियत डर पावन ब्रज गेह ॥ ७७८ ॥
ना जानो कब देखि हैं वह मूरति फिर नैन ॥ ॥
ग्वाल बालकन संग मिल भोजन करि सुख दैन ७७९

कहन लगी इक दिवस हरि मोघर मारवन चोर॥
मैं दुर छबि निररवत नयन बलि हारी तृणा तोर ७८०
चले भाजि पकरी भुजा ले कनियां हिय लाय॥
जैसे लगि छाती रहे सो सुख किम कहि जाय ७८१
मन मोहन के खेल को कहूँ लगि करें बखान॥
भये पराये श्याम अब सुन सुन जिय अकुलान ७८२
करि बिलाप बोली सखी कहे श्याम कोउ जाय॥
बन माहीं बिडरी फिरत तुम बिनु मोहन गाय ७८३
आय सँभारें जान निज लावेंगौयन घेर ॥ ॥
मधुर मनोहर सुख सदन करि मुरली की टेर ७८४
कहत एक यों मति कहो कहो बसो ब्रज फेर॥
कहें न तुम सोंफेर अब लावो गौयन घेर ॥ ७८५
नहीं जगावें प्रात ही बन पठवन के हेत ॥
बेरजोन मारवन चोर हरि यशुमति उर हन देत ७८६
ऊखल बँधवावें न फिर खेगुण प्रगट बखान॥
दान देत नहिं भगा रिहें छाँड़ दीन हठि मान ७८७
बेणीसुमन गुहाय अरु चरण महावर लाय॥
सो नाहीं कबहूं कहें देउ दरश पिय आय॥ ७८८
कहत कोऊपरि पांय हरि रेसें ले ले नाम ॥ ॥
धन्य भागि जो फिर सखी ब्रज आवें घन श्याम ७८९
अब नहिं आवें ब्रज सखी बोलि उठी इक बाम॥

रूप पद तजि ह्यां ग्वाल क्यों कहि लावेंगे श्याम ७८०
हय गज होत सवार ह्यां बाढ्यो अधिक प्रताप ॥
ह्यां ब्रज गाय चराय वन पावें कौन कलाप ७८१
ह्यां पहरत श्री अंग हरि नाना बसन अनूप ॥
यहां ओढि क्यों कामरी होंय ग्वाल के रूप ७८२
फेरमिलन पिय कहि गये हँसि सुख चलती बेर ॥
सो अब हम जानी परी कपट प्रीति करि हेर ॥ ७८३
उतही मग जो वत सखी नयननमानी हार ॥ ॥
भीजत उरकी कञ्चु की बर्षत अंशुवन धार ७८४
सपनेहिं देखें श्याम को नींद परे जो नैन ॥ ॥
जैसो दिन तैसी निशा परे न पल भरि चैन ७८५
आज लखे मैं सपन में बोल उठो डुक बाम ॥
मोहन मदन गोपाल जनु आये मेरे धाम ॥ ७८६
हँसि पकरी मेरी भुजा मोहन नवल किशोर ॥
भई नींद बैरिनि सखीरही न पल भरि ओर ७८७ ॥
जागि परी कोउ ढिग नहीं भई दशा कछि नाय ॥
बिरह काम दोऊ अनल मारी अधिक जराय ७८८
वेई ऋतु वेइ मास हैं वेई दिन वेइ रैन ॥ ॥
बिन हरि मदन बिलास सब पलट परे दुख दैन ७८९
भयो कन्दरा घर सखी शूली ह्वै गई सेज ॥ ॥
शीतल शशि की किरण अब भई अनल को तेज ७९०

मयल नीर घसि धरि हृदय सो अति पीर बढ़ाय ॥
अरुणा फूल बनसूझियत नयनन आगि जराय ८०२
लगत तीर मानो हृदय बहत जो विविध समीर ॥
जरत करेजो अवरा सुनि बोलत कोकिल कीर ८०३
पिय बिनु लगत कठार सी परत बून्द जो अंग ॥
उठत दाह जिय अधिक सुन चातक बोल उमंग ८०४
कहन लगी सखी एक यों चातक दोषन लाय ॥
अति सुकराठ पियरटनरट बिहिन होत सहाय ८०५
अबलन करत सहायता आप सुधा रस पान ॥
या पक्षी सम और जग कोन सुकृत की खान ८०६
जो आवे पर काज ही सुफल जनम जग सोय ॥
मगन बाल हरि बिरह रस ऐसें हीसब कोय ८०७
सोवत जागत दिवस निशि भूलत नाहिं गोपाल
पथिक जात मधु बन चले तिन्हें घेर ब्रजबाल ८०९
कहें पायं तुम्हरे परें जात पिया के देश ॥ ॥
कहियो उत घन श्याम सों ब्रज उतपात संदेश ८०९
सुर पति यज्ञ मिटाय तुम गिरिधर ब्रजहि बचाय ॥
बिरह रूप करि आय चढ़ि चाहत फेर बहाय ८१०
कारे घन दोऊ नयन लगी झरी दिन रैन ॥ ॥
लगो पनारे बहन युग कुचन बीच कित चैन ८११
तीक्षण झक झोरा पवन ऊर्द्ध श्वास बरवान ॥ ॥

गरज शब्द घन घोर की सोई पीर पिछान॥ ८११
व्यथा प्रबाह बढ़्यो अधिक डूबत हैं ब्रज नारि
लीजे आय निकारि सब तुम्हरी बाट निहारि ८१२
कहि गये श्री मुख मृदु बचन आय मिलेंगे फेर॥
अवधि बीत आये नहीं रहीं बैठ मग हेर॥ ८१३
तुम बिनु तलफत प्राण प्रिय जैसें जल बिनु मीन
ब्रज गति ऐसी जानिये भवन जो दीपक हीन ८१४
राम दुहाई आन करि कहियो पथिक सुनाय॥
सुन्दर मोहन लाल सों यह सब व्यथा जनाय ८१५
तुम बिनु नन्द नन्दन पिया श्री ब्रष भान कुमारि॥
बदन ज्योति जनु छिप गई निज मुख आँचर डारि ८१६
फुल्लित कमल स्वरूप सम हुते प्रिया के नैन॥
अब निचुरे रँग दीरि वयत ह्वै कुरूप के सैन॥ ८१७
बिरहा नल की तापना तन गति परम लखाय॥॥
काचो कञ्चन फेरि वयत जैसें आँच लगाय ८१८
मुख सम्पति तुम बिनु कहां सो सब गयो हिराय॥
कोकिल बाणी मुख नहीं कहत रैन दिन हाय ८१९
मान साध सर बसु गई प्यासी दरशन श्याम॥
ह्वै उदास तन मलिन अति व्याकुल निशि दिन बाम ८२०
जब चातक पिक अलि कुल न अनखाती लखि नैन
अब पूछित कुशलात तिन करि स्नेह हित बैन॥ ८२१

ललनादिक सब सरिवन सों गर्व करत ही जीय ॥
अब रोवत मिलहै बिकल लगि लगि तिनके हीय ८२२
ऐसें निज निज हेत सब श्याम संदेशा देहिं ॥
होत साझ तहं पथिक कों चलत छोरगहि लेहिं ८२३
हरि बियोग पीड़ा हृदय बिरह बिकल ब्रज नारि ॥
वरणन व्यथा जेहिं तेहिं बिना दरण धीर नहिं धारि ८२४
बोलत चातक रैन जब कहत कोउ अनखाय ॥
विरह अनल इक जरत में जरती अधिक जराय ८२५
पिया हमारे घर नहीं तू कूकत पिय नाम ॥ ॥
उपजति अति आरति हृदय सुन सुन बिरह निबाम ८२६
सुन शारंग इक कहत यों हम सब तेरी दास ॥ ॥
वहां जाय टेरो अधिक है हरि मदन बिलास ८२७
पावस ऋतु आवन भयो ग्रीषम करत पयान ॥
बढ्यो चाव चित तियन को मिलन पीय सुख दान ८२८
लेआवहु घन श्याम को चातक सुयश कमाय ॥
मानेंगो तेरो कह्यो तेरे हित ब्रज राय ॥ ८२९ ॥
कोऊ चातक बैन सुन सखी कहत सुख बैन ॥
यह बिहंग मोहिं पीवतें प्यारो अति सुख दैन ८३०
बिरहानल कारो भयो पिय हित रटत पुकार ॥ ॥
स्वाति लागि वरुसहित दुख त्याग सिन्धु कोबार ८३१
याके हिय पिय पी रहे जानत पीर पराय ॥ ॥

लग्यो बान जेहिं प्रेम को व्यथा प्रेम समुझाय ८३२
कोउ कहत सुनरी श्रवरा कोकिल सखी सुजान॥
रहत जहाँ हमरे पिया करि यो तहाँ पयान ८३३॥
सुन्दर परम सयानतू मधुर बचन सुख देत ॥
तो समान नहिं और जग उपकारी हित हेत ८३४
उपबन बैठ सुनाइयो यही श्याम को टेर ॥ ॥
ब्रज अबला मन मथ प्रबल बल करि लीन्हो घेर ८३५
ले आवहु पिय फेर ब्रज सुयश सुकृत की खान ॥
गावें हम गो कुल सकल तुव कीरत को गान ८३६
मोरन बोलत बरजरी मेंसें कहि इक नारि ॥ ॥
रह्यो जात नहिं बोल सुन बिनु श्री नन्द कुमार ८३७
मरे नयें ब्रजते टरे सुन सखि बैरी मोर ॥ ॥
कुहुक करत बेहाल हम हे बिदेश चित चोर ८३८
कृष्ण ध्यान लौ लीन यों बिरह मगन ब्रज नारि ॥
प्रेम रूप ब्रजनागरी नाहिं न इक छिन न्यारि ८३९
कृष्ण रूप छवि मन हरण बसी जो जिन के नैन॥
कृष्ण कृष्ण अनुदिन सदा रटि रसना सुख बैन ८४०
हरि के गुण गुरिगायत सकल मन पावत आनन्द॥
हिय हुलास श्रवणान सुखद सुनियत यश ब्रज चन्द ८४१
पल भर नहिं विसरत हृदय मूरति श्याम बसाय॥
घर बाहिर बैठत उठत चलत फिरत गुण गाय ८४२

सोवत जागत रैन दिन गुप्त प्रगट यहि नेम ॥
नहिं सुहात कछु और बिन प्रीति रीति हरि प्रेम ८४३
ब्रज वनिता भइ कृष्ण मय कृष्ण प्रेम रस पाग ॥
विदित होय तिहुँ लोक में सुन्दर सुयश सभाग ८४४
धन्य प्रीति वहि गाइये कृष्ण प्रीति जो होय ॥
सुरत धन्य सोइ कृष्ण रति रही जो सुरत समोय ८४५
जो हरि संग बिहार सुख ताहि धन्य करि गाय॥
धनि वह दुख जो कृष्ण के बिरह रहत मन लाय ८४६
जामें हित घन श्याम सों धनि जप तप धनि ज्ञान
हरि दासन को जन्म जग धनि धनि होत बखान ८४७
जे आश्रित इक कृष्ण के सब बिध धनि वेहोंहि ॥
प्रेम प्रीति रस श्याम बिनु और न नयनन जोहिं ८४८
निशि बासर हरि ध्यान हीं गोपिन यशुमति नन्द
रहे प्राण लगि आश दृढ मिलन श्याम ब्रजचन्द ८४९
बिसरे सब व्योहार उन और न प्राण अधार ॥
सुरत नंद नंदन सुरत वह अन्धल कुटि निरधार ८५०

यज्ञोपवीत॥

हरि जब ते मधुपुरि बसे होत तहाँ नित मोद ॥
निरख सुवन श्री देवकी मगन मनोरथ गोद ८५१
मुदित पिता यादव सकल पुर बासी नर नारि॥
एक दिवस वसुदेव जू कीन्हों यही बिचारि। ८५२॥

राम कृष्ण ब्रज में रहें मिल ग्वालन के माहिं ॥
यदु बंशिन कुल धर्म की रीति जो जानत नाहिं ८५३
तातें इन को दीजिये यज्ञोपवीत कराय ॥ ॥
पूंछ सुदिन शुभ लग्न धरि गर्गा चारि बुलाय ८५४
यज्ञ काज तहँ साज सब कीने विविध विधान ॥
सकल तीरथन आनि जल रामकृष्ण अस्नान ८५५
करि अभिषेक पुनीत हरि वेद मन्त्र पढ़ि रीत ॥
राम श्याम को गर्ग मुनि दीन्हो यज्ञोपवीत ८५६
बेद शास्त्र कहिं नेति मुख पावत अन्त न शेष ॥
दियो ताहि श्री गर्ग मुनि गायत्री उपदेश ॥ ८५७
पूजन करि बसुदेव जू दियो द्विजन को दान ॥
बन्दीजन बहु दर्ब मिल नारिन मङ्गल गान ॥ ८५८
लखि कौतुक सुरगरा मुदित सुमन वर्ष झरि लाय ॥
परम उछाह अनन्द अति तात मातु उर छाय ॥ ८५९ ॥
विद्या पढन गये दोउ सकल गुणन की खान ॥ ॥
गुरु सेवा हित चित दियो लखि प्रभाव सुख मान ८६०
पढ़ लीनी विद्या सकल अल्प काल दोउ भ्रात ॥
जानि जगत गुरु जगत पति सांदीपन हरषात ॥ ८६१
आनि दिये गुरु के सुवन यादव पति जगदीश ॥ ॥
भये सुखी द्विज तिय सहित हरषित दई अशीश ८६२
गुरु आयसु पुनि मधुपुरी आये दोऊ भाय ॥ ॥

भयो मनोरथ पूरन रवि तात मातु बलि जाय ॥ ८६३
राज काज लागे करन हरि आयसु अनुसार ॥
हित जन पुरजन नारि नर सुख हरि बदन निहार ८६४
सखा प्रधान के साथ में ऊधो अरु अक्रूर ॥ ॥
तिन सँग मिल खेलत हँसत भक्त मनोरथ पूर ८६५
नँद नन्दन ब्रज नाथ को ब्रज बासिन में ध्यान ॥
रहत भक्त रस प्रेम बसि यदपि ब्रह्म गुण गान ८६६

श्री ऊधो जी कूं ब्रज को पठायबो ॥

ऊधो के उर में रहत ब्रह्म ब्रह्म रट नेम ॥ ॥
त्रिगुण रूप करि मान हरि रुचे न बाणी प्रेम ८६७
श्री मुख ब्रज की बात जब लावें नन्द किशोर ॥
ऊधो हँसि उचटा वहीं हरि पछितात न थोर ८६८
बन्यो नीक नहिं साथ यह काक हंस को संग ॥
सो मन अनु दिन ध्यान ब्रज प्रेम तरंग उमंग ॥ ८६९
नहिं बिसरत दिन रात सो कहँ वह सुख ब्रज धाम।
कहँ हितकारी मातु पितु नन्द यशोदा नाम ॥ ८७०
कहां सखन को सँग जो केल बिपिन बहु भाँति ॥
बंशीबट यमुना निकट मिल बैठत जुरि पांति ॥ ८७१
याहि बढाऊं मान उर यदुपति कियो बिचार ॥
कहूं जाउ ब्रज तियन कूं सिखवो ज्ञान प्रकार ८७२
धरि निज मन अभिमान तब ऊधो ब्रज में जाय ॥

ऐहें ब्रजते साधु बन प्रेम भक्ति रस पाय॥ ८७३॥
अपने उर अनुमान यों बैठे करत मुरारि॥ ॥
याके जियते दीजिये ज्ञान गिमान निकारि ८७४
तेहि अवसर हरि के निकट ऊधो पहुंचे आय॥
अंकम भरि मिल मित्र सों श्री मुख बचन सुनाय ८७५
ऊधो सुनिये कान करि ब्रज सुख नहिं बिसरात॥
उठि भागत नहिं जान मन यहां नयन कुल गात ८७६
मिटत न मन पछिताय मम ब्रजहि छाँड दुख लीन।
यह सुन मन मुसिकायतब बोले सरवा प्रबीन ८७७
मिथ्या जगा ब्योहार हे हित नहिं सदा थिराय ॥
एक ब्रह्म सुख सार ही सुन श्री यादव राय॥ ८७८
जब ऊधो यह ज्ञान के कहे बिहँसि मुख बैन ॥
पुनि बोले अति हर्ष मन मोहन राजिव नैन ८७९
भाई मोमन माहिं अति ऊधो तुम्हरी बात ॥
तुम समान कोउ न सरवा जासों हित अधिकात ८८०
मित्र बेग ब्रज जाइये ब्रज जन होउ सहाय ॥ ॥
हितू न तुम सम और जग जो ब्रज दुःख मिटाय ८८१
तुम ते ज्ञानी कौन जो मित्र रू महा प्रबीन ॥ ॥
कीजो होहिं सो ब्रज बधू पवृम साधना लीन ८८२
डारें मोहिं बिसार मन ब्रह्म अलख रुचि देहिं ॥
ज्ञान योग उपदेश हित ब्रज बनिता सुख लेहिं ८८३

हमरे बिनु ब्रज जनन को छिन युगसम हिं बिहाय॥
करो गमन ब्रज बेग ही श्री हरि श्री मुख गाय ८८४
करियो बिलम न लाय ह्यां ऊधो ब्रज में बास ॥
श्याम चतुरई करत हम तुम बिनु यहां उदास ८८५
जल बिनु मीन जियत सखा करियो सोइ बिचार॥
अति प्रबीण शिरदऊं कहा तुम कूं बार म्बार ८८६
ऊधो बोले मान करि ज्ञान गर्ब उर माहिं ॥ ॥
तुम आयसु जगदीश कूं कैसें कहूं कि नाहिं ८८७
ऊधो अब हीं जाउ यह हँसि बोले घन श्याम॥
करहु बोध दै ज्ञान जो एक पन्थ ह्वै काम॥ ८८८
पहिले कीजो मित्र तुम यशुमति नन्द सतोष ॥
सकुच रहित पुनि तियन कूं ज्ञान कथा करि पोष ८८९
वे हैं महा प्रबीन अति तुरत समुझि हैं ज्ञान ॥ ॥
जल पायें ज्यों मीन सब प्रीतल ह्वे हैं प्रान॥ ८९०
करि सहज न हिं काज हित ब्रजहि पठावत श्याम
ऊधो ब्रज जन दरश लहि होहिं सबन अभिराम ८९१
दई जो ऊधो हाथ ही लिख पाती यदुराय ॥ ॥
और मुख आगर मृदु बचन कीनी बिनय सुनाय ८९२
रहियो कुशला नन्द तुम अहो यशोमति मात ॥
कछु दिन में तहां आयहैं बल मोहन दोउ भ्रात ८९३
जबते बिछुरो मात सों कीजे कहा बखान ॥ ॥

नहीं कहत ता दिवसते मोहि कोऊ सुख कान्ह ८९४
कह्यो सँदेशा न जात सो तुम पाले दुख पाय ॥
अब सुत करि मोहि देवकी नित नव हेत जनाय ८९५
नन्द बबा एतो निठुर मन काहे करि लीन ॥
करी न सोध सँभारि पुनि घालि मधुपुरी दीन ८९६
नर नारिन ब्रज जन सकल बच्छ गाय बन चार ॥
यथा योग समुझाय तिन कहियो कुशल हमार ८९७
प्रगट श्याम ब्रज प्रीतियों कहि ऊधों सों बैन ॥
तिन्हें करन विप्रीति सों चले ज्ञान ले सैन ॥ ८९८
श्री हलधर आये तहां लखि ऊधो ब्रज जात ॥
भरे नयन दोउ प्रेमजल समुझत ब्रज की बात ८९९
श्री बसुदेव अरु देवकी तिनहु सुन्यो यह कान ॥
हरि आयसु अनुसार ब्रज ऊधो करत पयान ९००
लिख पाती बसुदेव जू गुरा हित यशुमति नन्द ॥
हमें उचित सेवा जो तुम पाले सुत जग बन्द ९०१
ये दोउ तुम्हरे हि पुत्र हैं हम कहिवे को नाम ॥
करें भजन तुम्हरो सदा श्री मोहन बल राम ९०२
करि बिचार ऊधो चले यहै गर्ब उर धारि ॥
ज्ञान कथा कहा समुझ हैं ग्वालिनि ब्रज की नारि ९०३
ब्रज लोगन चलि देख हूं जिन्हें मान यदुराय ॥
गमन उपंग सुत हर्ष तन गोपिन मन दरशाय ॥ ९०४

लागत श्रवरान भँवर इक पुनि पुनि करि गुंजारि।
श्याममिलन शुभ सगुण पुनि कागउडावतनारि ९०५
उड़ मन भावन काग तू जो गोकुल हरि आय ॥
दधि माखन तुव मुखभरें अन्चर पागबधाय ९०६
बन्द कन्चुकी टूट हिल अन्चल बिनहि बयार॥
बायस उड़ बैठत कहें उमगत हर्ष अपार॥ ९०७
आवें गोकुल साँवरे कहत परस्पर बैन ॥ ॥
लावे सुध कोउ श्याम की फरकत भुज अरु नैन ९०८
ब्रजतिय अति बड़ भागिनी घर घर सगुण बिचार
दरश आश अनुराग मन मोहन नन्द कुमार ९०९
मथुरा तन टीका लाय सब अनुदिन पन्थ निहारि
कब आवें ब्रजनाथ ब्रज अभिलाषत ब्रजनारि ९१०॥

श्री गोकुल में ऊधोजी को आगमन॥

मधुपुरि तज गोकुल निकट ऊधो पहुंचे आय॥
रथ बैठे तद्रूप हरि शोभा परत लखाय ॥ ९११॥
भरी परम अनुराग तिय रथ तन लाये नैन ॥ ॥
भये दूर दुख सपन सुख त्यूटत जैसे रैन॥ ९१२
आवत नन्द कुमार ब्रज परयो जो घर घर शोर ॥
तरुण वृद्ध अरु बार सब निकसे देखन दौर ९१३
मुदित यशोदा नन्द हू चले लेन अगुवाय॥ ॥
तेहि छिन ब्रज के लोग सब आनंद उर न समाय ९१४

गई बदन मुरझाय तिय रथ देखे नहिं श्याम॥
सुनत विकल लखि यशुमति पहिं आई जुरि ब्रजबाम ९१५
सखा पठायो श्याम ने भली भई यह बात॥
कहत महरि सों बाम सब उठी बूझि कुशलात ९१६
सुफल घरी है आज की करहु हर्ष मन जान॥
लिख पठयो है हे कबूं आवन कूं ब्रजकान्ह ९१७
रथ ते हर्ष उतारि लै गये नन्द निज पौर॥
अरघ देत भीतर लियो आदर कियो न थोर ९१८
कह ऊधो बलबीर सुधि कबहूं करत हमारि॥
पूछ नन्द पुलकाय तन गद गद बचन उचारि ९१९
चूकि समय पाछताइये सरे काज कह आज॥
हम अहीर जाने नहीं घर आये महराज॥ ९२०
ऊधो हम जाने नहीं कहि यशुमति भरि नैन॥
हित मान्यो हम पुत्र करि बासुदेव सुख दैन ९२१
दुहत भोर के बाल लखि खरिक माहिं नित जात॥
करत फूल सुधि श्याम की अधिक करेजे घात ९२२
को गैया ले जाय अब जोरि सखन के संग॥ ॥
बनते गाय चराय को आवे सांझ उमंग॥ ९२३॥
काहि लेउं हिय लाय मुख कमल मनोहर चूमि॥
आँचर रजत झारि केवलि हारिन की लूम॥ ९२४॥
ऊधो साँचि बखानियें बिलख कहत यों नन्द॥ ॥

फेर हू ब्रज ऐहैं कि धौं मन मोहन ब्रज चन्द ९२५
कहि जो गये बलवीर जू ऊधो चलतो बेर ॥ ॥
तातन होउ अधीर हम फिर मिल हैं हित हेर ९२६
कबहुं आय प्रति पाल सो करि हैं बचन कृपाल ॥
कह ऊधो तुम सों कहा भार्यो दीन दयाल ९२७
भये सकल कृश गात ह्यौं श्याम बिरह नर नारि ॥
युग सम हम को रैन दिन बिनु हरि कठिन अपार ९२८
समुझावैं ब्रज लोग सब तऊ बोध हम नाहिं ॥
मारवन हरि मुख जोग लखि उठत शूल जिय माहिं ९२९
रोटी अरु नवनीत ह्वौ बिन मांगो उठ प्रात ॥ ॥
को दै है करि प्रीत बिन बान जानि सो तात ॥ ९३०
ऊधो कें पायन परी कहि यशुमति बिलखाय ॥
धनि यशु मति नंद राय कहि ऊधो करत बड़ाय ९३१
धारा पियरे श्याम जो धन्य तुम्हारो भाग ॥ ॥
पर ब्रह्म घट घट प्रगट जिन सों अति अनुराग ९३२
सुत करि तिन्हें न जानियें वे करता संसार ॥ ॥
नहीं तात कोउ मात हरि भक्तन हित अवतार ९३३
हम हैं सब अज्ञान जो हरि महिमा नहिं जान ॥ ॥
जन्म कर्म करि रहित हैं पुरुषोत्तम भगवान ९३४
शिखवत जो ऊधो हमें हम हूं मन समुझाय ॥ ॥
रह्यो परत नहिं देख बिन वह मृदु रूप कन्हाय ९३५

फिरत दुरवारी गाय सों जिन्हें चरायो श्याम ॥ ॥
सूंघत हरि स्वोजें सकल गो दोहन के धाम ॥ ९३६
सब ब्रज बिरह अधीर हम युग समपल्महि बिहाय।
धरें कौन विधि धीरबिन मन मोहन ब्रजराय॥ ९३७
नन्द भवन भई भीर अति कुशल पूंछि नर नारि ॥
ऊधो शिथिल शरीर लखि ब्रजगति प्रेम अपार ९३८
ब्रज जन सब अकुलात लखि ऊधो दशा बिहाल॥
कहें कान्हो कुशलात किन श्री हलधर गोपाल ९३९
इक छिन युग सम जात है सुने प्रीति बिनु श्याम ॥
आवन कह्यो कि नाहिं हरि कृपासिन्धु ब्रजधाम ९४०
सदा कुशल दोउ वीर हैं ऊधो कहि धरि धीर ॥
दियो पत्र यह लिरव कह्यो सुन संदेश बलवीर ९४१
गोप सखा मति जान मोहि ध्यावो योग समाधि ॥
घट घट मेरो बास है अबगति अगम अगाधि ९४२
गावत बेद पुराण बिन निगुण ज्ञान नहिं मुक्ति ॥
सगुण छांड निर्गुण भजो करो ध्यान दृढ युक्ति ९४३
मिलो ब्रह्म सुख जाय सब मिटें दुखद त्रय ताप ॥
गोपीजन बिलखानि सुन ऊधो बचन कलाप ९४४
भई कठिन उर पीर अति मिटी मिलन की आश ॥
डूब गईं बिन नीर ही बिरह व्यथा उदास॥ ९४५॥
जहं तहं करत बखान सब विकल परस्पर बैन॥

ह्वै गये कछु अब दूर वसि और हि हरि गुरा रेन ९४९
जान परत नहिं कर्म गति यह निज कर मन दोष॥
लिख पठयो अब ज्ञान पिय प्रेम सुधारस पोष ९४०
एक पहलें ही देह हम झुरस विरह की आगि॥
कोढ़ला हूते खेह करि अब ऊधो मन लागि ९४८
कृष्ण दरश हिय बास है लगो न यह हित चित्त॥
श्याम दरश की आश कलि परत न ऊधो नित्त ९४९
अवधि आश की याह हम रहें जो ऐसेहिं चैन॥
अगुरा अथाह परें बहुर लखो न ढूढ़ें नैन ९५०॥
युवतिन लाये योग तुम जैसे योगिन भोग॥ ॥
हम तन भयो वियोग अति सुनिये वचन कुयोग ९५१
कहत हो तजिये भोग कूं जप तप नेम अचार॥ ॥
सो विधु बन व्योहार क्यों करैं सुहागिन नारि ९५२
नंद नदन पद प्रीति जो हमें योग अरु नेम॥ ॥
ऊधो तुम्हें न दोष कछु विवश कूबरी प्रेम॥ ९५३
ऊधो अति लज्जित भये सुनिये युवतिन वैन॥
मौन धारि सकुचित महा करत न ऊंचे नैन॥ ९५४
मन लागे पछितानयों तियन सुनायो योग॥
रहि गये शीश नवाय सुनि वचन प्रेमरस भोग ९५५
मन माहीं जान्यो तबै ये गुरा श्याम सुजान॥
मोहि पठयो ब्रज धाम जो सो कारण जिय आन ९५६

श्री ऊधो जी को बरसाने कूं गमन॥

ऊधो सुनिये बैन तिन्ह प्रथम हि गुरु मन मान॥
दरशन करि भरि नैन पुनि करि प्रणाम हर्षानि ९५७
हरि आयसु अनुसार ही बरसाने को गौन॥ ॥
मन मन करत बिचार अब देखौं ह्वां गति कौन ९५८
सुनी हुती यह बात सम मधुबन ते कोउ आय॥
सुनि सँदेश यूथन चलीं अति आतुर उठधाय ९५९
ऊधो मिले जो पन्थ मधि लखि रथ कियो अँदेश॥
पुनि आयो अक्रूर यह समुझ शोच जिय शेष ९६०
कौन काज अब चित धर्यो ले गयो प्रथम हि प्रान॥
लह्यो दरश ऊधो जबै तियन धीर जिय आन ९६१
भई सुखारी नारि सब लखि ऊधो को रूप॥
सरवा समीपी पीय को सुन्दर श्याम स्वरूप ९६२
ऊधो रथते ऊतरे बैठे तरु की छाहिं॥
ब्रज जन चहुं दिशि भीर अति आनन्दित मन माहिं ९६३
अतिथि पाहुन जानि मन सुधि लाये ब्रज राज॥
पूजे प्रेम सहित सबन सनमाने हित साज॥ ९६४
ब्रज वनिता निज हाथ सों लै लै पाती श्याम॥
धरि धरि नैन सिहाहिं कोउ हिय लगाय विश्राम ९६५
मिलमिल सुख पायो सबन हित करि पाती पाय॥
बाँच सुनावो मृदु बचन पुनि ऊधो कर दीय॥ ९६६

ऊधो बाँचत पत्रिका देत बोध ब्रज नारि ।॥
करि सँबोध लागे कहन कथा ज्ञान विस्तार ९६७
रह गई ग्रीषा नवाय सभ सुने बचन जो कान ॥
माँगत रस अमृत मनो गरल पिवायो आन॥ ९६८
रहीं ठगीसी नारि सभ दारुण सुनत सँदेश ॥ ॥
पुनि सँभारि बोली बचन हाथ जोरि अदेश ९६९
धनि ऊधो कृपालात हरि भली सुनाई आय॥
श्याम मिलन की आश सो दीन्हो ताहि मिटाय ९७०
अधर अरुण मुरली धरें लाल कमल दल नैन ॥
सुन ऊधो वह रूप हम नहिं बिसरत दिन रैन ९७१
सजल मेघ तन श्याम छबि रूप राशि आनन्द ॥
कौन ब्रह्म जानित न हम मोहीं श्री नँदनन्द ९७२
ऊधो सुनिये कान करि हमें उपासन कान्ह ॥
हाँसी करि हम जान ही नाम ब्रह्म सुनि ज्ञान ९७३
हाथ पाँव मुख हीन है रूप रेख नहिं चीन्ह ॥
जायो यशु मति कौन को पौढ़ि पलन सुख लीन ९७४
कहन तो तरी बात को शिरवयो गोद रिवलाय॥
नहिं सूझत ऊधो तिन्हें दिये न हरि दृग ताय ९७५
नट वर वेष गोपाल मन मोहन रूप अगाध ॥
सो तजि क्यों रवोजत फिरें साधन शून्य समाधि ९७६
धरो सँभार सयान तुम हित करि अपनो योग ॥

भक्त विरोधी ज्ञान हम सुने न बाढ़े रोग ९७७
भँवर सक तेहि जरा तहाँ आयो करि गुञ्जार ॥
ऊधो प्रति तासों कहैं व्यंग्यबचन ब्रज नारि ९७८
निज निज मन की उक्ति करि कहत घात के बैन ॥
अलि प्रति ढोर सुना वहीं देखत ऊधो नैन ॥ ९७९
ऊधो भूले ज्ञान सब उत्तर बोलन आय ॥ ॥
सुन सुन गोपिन के बचन मौन भये सुख पाय ९८०
बोलि कह्यो इक ग्वारनी सुनहु सखी सब सह ॥
कहत मधुप बस रावरो बन बास छुड़ावत गेह ९८१
ऊधो इन को नाम है उन्हैं नाम अक्रूर ॥ ॥
घात गांस जानत सकल दोऊ गुण भरि पूर ९८२
इन ही मिल करि घात गुण कंस राज मर वाय ॥
कृपा करी ब्रज पग दियो अबलन योग शिखाय ९८३
दोऊ इक मति जानिये बोल उठी इक नारि ॥
बचन फांसि वह प्रथम ही ले गयो प्राण पियारि ९८४
दया धर्म तिन के नहीं कीनो ब्रज सुख हीन ॥ ॥
ज्ञानवान ऊधो अबै ब्रज बनिता हत कीन ९८५
देखो दियो पजार इन योग अनल चहुं ओर ॥
भई कठिन बचिये कहाँ रह्यो न भाजन ठौर ९८६
मधुप सांप की कैंचुरी जिम हरि की हित रीति ॥
तज्यो श्याम हम सभन को करी न पाछे प्रीति ९८७

करहु राज राजें तहां दीजत यहै असीस ॥ ॥
न्हातहु रवसोन बारतन मन मोहन गोपीश ६८८
बहु रंगिन सुख संग है जितहिं जाहिं तित लेहिं ॥
चातक मीन पतंग गति इक रंगी दुख देहिं ६८९
कागी और मराल को बन्यो नीक अब साथ ॥
सुन्दर जोरी सोहनी दासी पति ब्रजनाथ ॥ ६९०
बारह मांसी फाग अब दोउ खेलें तज लाज ॥
हांसी अरु अनुराग है लोंड़ी डोंड़ी बाज ॥ ६९१
दासी बसि भये आप हरि हम को योग सिखाय
चतुर चकोरत आग जो अचरज कह्यो न जाय ६९२
वा चेरी के काज अब गावत जग यह गीति ॥
चेरी पति ब्रज राज हैं यह अचरज की रीति ६९३ ॥
ऊधो कहियो जाय तुम तजें कूबरी सौत ॥
सौति कहावत कूबरी यह सुन दुख जिय होत ६९४
सिद्धि कहा ना कूब में सिरज्यो सो नाहिं गोपाल ॥
हम हूं कूब बनाय चलि दिखरावें वही चाल ६९५
हरि हम सों पहिचान करि जैसें राज के दांत ॥
काज करन के और ही दिखरावन इक भाँति ६९६
मन माने की बात है ऊधो कही न जाय ॥ ॥
मधुर छुहारा दाख तजि विष भक्षी विष खाय ६९७
काटी कटें न राति अब व्याकुल व्यथा अपार ॥

अच्छर चीर चुचात नित पोंछित अँसुवन धार९९८
कहें कहा लौं निज कथा करि हरि निठुर बरवान॥
अबलन करन सहाय अलि तुम हू योग सिखान९९९
कठिन बिरह की पीर है जेहिं व्यापे सोई जान॥
क्यों धरिये मन धीर अलि सुनतुम बचन भयान१०००
गूँथे मोहन हाथ निज केश फुलेल रमाय॥ ॥
जटा बनावन अब कह्यो तिन कूं भस्म लगाय१००१
सुन्दर सरस सुहाय हम जातन पहिरे चीर॥ ॥
ताहि कहत भगुवें बसन मति दीन्ही बलवीर१००२
जानी तिन की घात हम हरि अति कठिन कठोर॥
कहत कठिन तुम हू मधुप अनुचित तुम्हरी ओर१००३
तब मृदु बेणु बजाय हम बोल पठाई रात॥ ॥
कियो रास रस चैन अब कटुक सुनावें बात१००४
रंग जिमि हम बश कीन्ह सब मृदु मुसकनि कटाछ श्याम॥
योग छुरी लै गर दई भलो कियो यह काम१००५
कपट प्रीति बिस्तार हरि करी जो ऐसी रीत॥ ॥
रस की ऊख उखार ब्रज बोय बेलि बिपरीत१००६
कहिये कहा बरवान तिन्ह जिन ऐसी मति कीन्ह॥
कृष्ण प्राण प्यारे हमें हरि भायें नहि दीन१००७
बोली सुनये बैन नहीं नहि क्षण अरु इक नारि॥
कहत कहा भरि नैन जल अलि सों बारम्बार१००८

वे माधव ये मधुप हैं भेद न काहू भाँति ॥
पढ़े एक विद्या दोउ बैठे एकहि पाँति २०९
पल माहीं भजि जात हैं इन के दया न धर्म ॥
प्रथम जासु रस खात पुनि करैं न वाकी सर्म २१०
कारे सभ इक सार हैं कहत एक यों बैन ॥
कपटिन की चटसार सो देखि लेउ निज नैन २११
अहि कारे कारे जलद करिये मन अनुमान ॥
कपट काग कोइल भ्रमर कवि जन गायो गान २१२
इन गुरा की सभ उपमा कवि जन कियो बखान
श्याम अलक अलि कुल भलक वाणी कोकिल गान २१३
तन की शोभा जलद छवि भुजहि भुजंग समान ॥
कान्ह कपट की खान हैं करियो री सभ कान २१४
गये भुजंग लो भागि हरि सुदु सुस कनि विखंडार ॥
कोकिल सुत कर तूति करि यशु मति नन्द विसार २१५
जैसें अलि रस सुमन ले गाये प्रीति को तोर ॥ ॥
हम चात्रिक जिम रटत नरटि वे घन भये कठोर २१६
हम नहिं निपट अजान हैं ऊधो सुनिये कान ॥ ॥
लियो राग हम जानि सो तुम जो बजाई तान २१७
देउ जाय तिन कूं उलट तुम ले आये जौन ॥
योग निबाहन हार हां ब्रज में ऐसो कौन २१८
गोपिन भोग अरु बधिर मत अन्ध आरसी जोय ॥

हमें सिखवावें योग सो यह न्याव तिन होय १०१९।
हमें योग जो योग है सोई योग मिलाय ॥ ॥
कहे न जाने रोग जो सो नहिं बैद कहाय १०२०
मुरली धुनि बोली बिपिन रस बिलास ब्रजराज।
मथुरा बस ज्ञानी भये पण्डित जी महराज १०२१
मन हीं की मन में रही सो कछु कह्यो न जाय ॥
जितते चहौ गुहार हम धारी तिनतें आय १०२२
जानत हैं सब कोय हरि जैसी हम सँग कीन॥
कियो पाय हैं आपनो हम तो सब सह लीन १०२३
प्रयाम यही जो चित धरी ऊधो कियो बखान॥
ब्रज बनिता तजि भोग कूं योग साध करि ध्यान १०२४
करें कृपा आवें यहां प्रगट सुनावें ज्ञान ॥
मान निकट उपदेश हम साधे योग विधान १०२५
रारब्यो कछु न दुराय तब खेले रस लपटाय ॥
मिल्यो कहां अब योग यह ऊधो कहियो जाय १०२६
निज स्वारथ वह सगुण है निरगुण हमें सिखाय॥
लिख पठयो निरवाण सो चाहें सहज लगाय १०२७
ऊधो तुम आँधर भये लखे न दिन औ रात ॥
ठकुरसुहाती कहत हो सुख सों सब ही बात १०२८
सुनत कौन तुम्हरे बचन बक वादित भ्रम सोय॥
ह्यांते उठ किन जात हो बन कारोजो होय॥ १०२९

परमारथ अरु बिरह बिच कर तन मूढ पिछान॥
राज रोग कफ ग्रसित कों कहत दही को खान १०३०
ऊधो करो बिचार मन बोलि कह्यो इक नारि॥
प्रथम देख ब्रज गति नयन करो योग बिस्तारि १०३१
नहीं रूप नहीं रेख हे अरु बपु वरण बरवान॥
प्रेम प्रीति कैसें करें तासों हम मन मान॥ १०३२॥
बिन चैतन चतुराय अरु नहीं तरँग बिन तोय॥
लख्यो न अबलौं ब्रज कोउ मधुप बता वत सोय १०३३
कहो लाख कोउ बिबिध हम बिन मोहन न सुहाय
चन्दन लखि कहो कौन बिधि अच्छ सुधारति जाय १०३४
सखी बकत बे काज कत बोल उठी इक बाम॥
जिन्हें लाज न बिबेक तिन्हें कहिबो अनुचित काम १०३५
चौपद समुझत हैं सखी षट पद कह्यो न मान
छाछ दूध तिन एक सो कहे सो करिय न कान १०३६
जारी एक अनंग हम बिरहिनि बिरह जो आँच॥
अब सुख पावैं फेर जब मन मोहन सँग नाँच १०३७
हम कूं दृढ ब्रत श्याम सों कहो बुरो संसार॥
नहीं चाह कोऊ मुक्ति की हमें कृष्ण सुख सार १०३८
दियो दरश ब्रज आय जो ऊधो हमरे हेत॥
मेंटो दुख हित करि वही जो हम को दुख देत॥ १०३९
आवैं सुन्दर श्याम ब्रज कीजे यतन कृपाल॥

निरखि पीय की सुरवदछबि सुख पावैं ब्रज बाल १०४०
साँचो योग उपाय है साँचो ज्ञान रु ध्यान ॥
हमैं साँच नँदलाल ही गर्ग बचन परिमान १०४१
हम अलि चेरी श्याम की बिबश होय मृदुहास ॥
सो छबि लखि जीवैं जियन नख शिख अंग बिलास १०४२
मधुप प्रीति रस जानि पुनि क्यों अजान हम हेत ॥
भ्रमत फिरत बहु सुमन क्यों कमल बँधाय अचेत १०४३
करैं आन सों प्रीत हम तजैं यशोमति लाल ॥
कोटि कहौ कोऊ मधुप पैरैं न या जंजाल ॥ १०४४
कहियत रूप बिराट के सूर चन्द दोउ नैन ॥
करत चकोरन भानु हित निरख चन्द उर चैन १०४५
सगुण रूप नँदलाल के भये जो लोचन दीन ॥
जल बिनु सुख पावैं नहीं डारो दूध जो मीन १०४६
हमरे मन अलि एक है एक हि मूरति श्याम ॥
अटक ताहि छाँडत न क्षण निरखत आठौं याम १०४७
लेती निगुण सँभार हम जो होते मन दोय ॥
सगुण श्याम शिर मौर सो कैसें डारैं खोय १०४८
जिन के मन दश बीस अलि दीजे उनको योग ॥
ऊधो निर्गुण लाय ब्रज क्यों डारत हो रोग १०४९
मोहीं गुण घन श्याम के निर्गुण कौन निबाह ॥
एक जन्म के कारने तजैं न हम तो वाहि ॥ १०५०

ऊधो बसें गोपाल नित हमरे अम्बुज हीय ॥
नहिं निकसत रस नेह रलि भये भँवर भोगीय१०५१
योग कथा अब जिन कहो ऊधो धरिये मौन॥
भजे आन घन श्याम तजि जरबर जननी जोन१०५२
कहन देऊ संसार को हमें भाव यह एक ॥ ॥
नद नँदन की प्रीति दृढ जावो और अनेक१०५३
प्रेम खोय जे प्रान तन रहें कौन ही काज ॥
बिना प्रेम शोभा कहां बिन निशि शशि हिन साज१०५४
बुरो न कोऊ मानियो बोल कह्यो इक नार॥
निरमन कहा पिछान रस रसिकहि जाननहार१०५५
कमलन ढिंग बीत्यो जनम दादुर रस न पिछान॥
अनुरागी अलि बिवश रस परे कमल बंधान१०५६
जाने कहा मिठास रस गूंगो बात सवाद॥ ॥
कहवो इन सों प्रेम रस घास काटि वो बाद १०५७
कहिये ऊधो कौन सों दहन कठिन निज हीय॥
पशु वेदन कछु कहिन सुख रहत सहत हीजीय१०५८
यतन रहत ही जानिये कठिन लगन की पीर॥
यन्त्र मन्त्र पढ़ुवे नर्थ कि वेदन खेंचलकीर१०५९
हम निज मन हिं कठोर करि बहु भाँतिन समुझाय
तदपि न क्यों हू भूलई मूरति कुँवर कन्हाय१०६०
पलक लगन नहिं सहन जब अब प्राण न क्यों चैन

लागे बर्ष बिहान जो बिनु देखें सुरवैन १०६१
अति ही कठिन कठोर हैं ऊधो हमरे हीय ॥
निलज फटें जब हीन क्यों बिछुरन लागे पीय १०६२
साँचो नेम निबाह जिन हम सों भली जो मीन ॥
हम काँची रस प्रेम की श्याम बिरह दुरवलीन १०६३
ऊधो तुम सों चूक निज कहो लगि करें बखान ॥
हम ब्रजबासिन को मनो शूल दाहिने जान १०६४
ऊधो कहियो जाय यह मन मोहन सों बैन ॥
आय देखि हें ब्रज दशा एकबार निज नैन १०६५
ऊधो तुम निश्चय कियो हम तन कह्यो बखान
सर्बमयी सबठौर हरि पूरण ब्रह्म पिछान १०६६ ॥
तौ ऊधो आवा गमन करत कौन के पास ॥
यहाँ वहाँ कहो कौन को नियर दूर किन बास १०६७
नहिं पावत योगी रहे योग समुद्र हि बूड ॥ ॥
बँधे यशोमति प्रेम वश सो ब्रज में सुन मूढ १०६८
हरि छबि अटके नयन हम जागत सोवत रैन ॥
बाल चरित्र किशोर गुण अमियसिन्धु सुरवैन १०६९
रट मरि हें पिय नाम हीं सुमिर सोई गुण ग्राम ॥
अनैलताप तन प्रथम घट भरि रस आठों याम १०७०
रवि रथ बेधत जाय जब सन्मुख सरसहि शूर ॥
पुनि फल फरत अघाय महि प्रथम बीज अंकूर १०७१

कृष्ण प्रेम मारग गह्यो सुख दुख कौन डराहिं॥
बिना नीर कछु और हित ऊधो मीन ननाहिं २०७२
ऊधो हम सब कर चुकीं कह्यो सखी इक बोल॥
धर्‌यो ध्यान मूंदे नयन हठ मन डांवा डोल २०७३
जिन पठये तुम सिख यहां उलट देउ तिन जाय॥
दीरघ परत तुम शिर पर्‌यो करें न हित ब्रजराय २०७४
तुम सों कियो बरवान अलि योगिन योग भुलाय॥
गयो न जान्यो पचि मरे ब्रह्म रंध्र निकसाय २०७५
हम उर जाको ध्यान हठ हम देखें वह ज्योत॥
हरि सो हीरा छाँड अलि क्यों हित करिये पोत २०७६
कहन कौन की बात तुम हम तजि गयो सो कौन॥
धनुष तोरि गज घात हति रजक मधु पुरी तीन २०७७
नृप की बन्द छुटाय किन हत्यो कंस को होय॥
को प्रगट्यो देवकि उदर तुम ब्रज पठये सोय २०७८
को निर्गुण को अलख गति जाको वार न पार॥
ब्रथा करत बकि बकि मधुप ब्रज श्रीनन्द कुमार २०७९
जात चरावन धेनु बन नित उठ ग्वालन संग॥
साँझ समय आवत सदन मुरली मधुर तरंग २०८०
सुनिये ऊधो जिन लखे फिर फिर मधपुरि ओर
सुफल जन्म सुख लीजिये ब्रज बसि लाभन थोर २०८१
ऊधो अपने चित धरो कथा प्रेम रस श्याम॥ ॥

डारदेहु निजनिगुणमतिनरवशिरवनिरसनिकाम१०८२
कृष्ण योग भावत हमें सोऊधो लरव नैन ॥ ॥
सुमति रवोह तन बैठ सुन जो हम भाषे बैन १०८३॥
करो कान सब अंग निज मन कूं लेहु बटोर ॥
तजो ज्ञान अभिमान हम कहैं कथा शिर मोर१०८४
भस्म अंग नहिं शृंग धुनि करें न रुंधन श्वास ॥
जटा शीश नहिं बेद पढ़ि अरु पुराण इतिहास १०८५
जग बन्दन बन्दन करें प्रेम भक्ति चित लाय ॥
नहीं धरैं मन कामना कर्म धर्म लपटाय ॥ १०८६॥
देखें हरि छवि रूप ही लगो नयन निमेष ॥ ॥
जागत याही योग नित हिय अनुराग विशेष १०८७
पागे रंग रस जानिये सुन्दर सर गुरा रूप ॥ ॥
लगा नयन गुरा सैन सों भृकुटी नयन अनूप१०८८
बाजन अनहद नाद सो मुरली धुनि पहिचान ॥
भोगन भोग सवादरस यही सुयोग वरवान १०८९
रह्यो परम सचुमान मन रुचि रस घूंटन लाय ॥
आनंद पद हरि संग सुख वररात पारनपाय१०९०
मच दियो रति रवन हम ज्ञान भजन गोपाल ॥
करे गुरू अब कौन सुन फीको मति बेचाल १०९१
बिसर नेम ह्वै विवश लरिव ऊधो ब्रज जन रीति ॥
नंद नदन सर बसु जिन्हें करि बरवान धनि रीति १०९२

मैं चररान को दास हूं तुम गुरु परम कृपाल ॥
करि निहाल दै दान रस प्रेम भक्ति गोपाल १०९३॥
आये ब्रज जन पास ही ऊधो सिखवन ज्ञान ॥
प्रेम भक्ति पावन लही मलिन उदास न मान १०९४
गावत गुण गोपाल के भयो मगन रस प्रेम ॥
लोट कुञ्ज बिट पन मिलत बिसर गयो सब नेम १०९५
लखि व्रज प्रेम बिलास अति ऊधो मगन हुलास॥
आयो हो दिन दोय कूं ब्रज बीते षट मास॥ १०९६॥
तब उपज्यो मन शोच ही श्री मुख वचन सँभार ॥
मोहिं बुलायो वेग हरि सो अति भई अबार १०९७
लीनो रथ पल नाय तब ऊधो अति चतुराय ॥
ब्रज जन सुनि ऊधो निकट तुरतहिं आये धाय १०९८
कर जोरें बिनती करत ऊधो शीश नवाय ॥
कृष्ण चन्द्र ढिग जानकी मांगन लग्यो बिदाय १०९९
मैं सेवक श्री कृष्ण को तैसो आपुन जान ॥
कहे बचन जो कछु तुम्हें भाषे श्याम सुजान ११००
जान आपनो दास मोहिं रहियो परम कृपाल ॥
ब्रजतिय बिवश हुलास सुनि ऊधो बचन रसाल ११०१
धनि ऊधो तुम धन्य हो धनि ये तुम्हरे बैन ॥
हम निदान जड़ ग्वारनी तुम सब विधगुण ऐन ११०२
होय न शील समान सम लघु दीरघ पहिचान ॥

भृगु ने मारी लात उर श्रीपति भूषण मान ११०३॥
नरम सिरस गरल समान जो कहां हमारे बोल।
मृदुल बचन शीतल कहां तुम जो कहत स्वमोल ११०४
करियो यतन कृपाल ह्वै ल्हे हैं दरश सुख दैन ॥
बिरह दहन गयो सूखतन देखत हो निज नैन ११०५
घोष बसे की चूक सब धरैं न मन ब्रज राय ॥ ॥
क्षमा करें ऊधो जो तुम कहियो अवसर पाय ११०६।
ऊधो और कहें कहा मन मोहन ब्रज राज ॥ ॥
बिरद सँभारे आपनो बाँह गहे की लाज॥ ११०७
यही हमारे आश हरि दीनन सदा दयाल ॥ ॥
हरि हैं लोचन प्यास हम दरशन देहिं कृपाल ११०८
मगन बिरह सागर सकल ब्रज बनितायें भाखि।
आये यशुमति नन्द पे ऊधो शिर पद राखि ११०९॥
मागन लगे बिदाय निज ऊधो दोउ कर जोर॥
धन्य धन्य सुख गाय कहि तुम सम नहिं और १११०
तुम जो देउ संदेश सब कहूं श्याम सों जाय ॥
हमरो बिलम अँदेश हूं करत होहिं ब्रज राय ११११
नन्द यशोदा मात सुनि ऊधो बचन स प्रीति॥
उमगि प्रेम भरि नयन जल बिलखाने हित रीति १११२
नन्द यशोमति के हृदय उठी बिरह की पीर ॥
कह्यो न जाय संदेश कछू टारत नयन नीर १११३

यशुदा कीजो अशीश यह ऊधो कहियो श्याम॥
चिरजीवहु दोउ लाडिले मनमोहन बलराम ११११४
मया कीजियो मात की दोऊ दया के मूल ॥
मिलो आय इकबार पुनि मेटि हिये की शूल ११११५
कह्यो नन्द भरि नयन दे दोहनि भरि जो छीर ॥
धौरी को यह दूध नित भावत हो हरि हीर ११११६।
दई यशोमति माय पुनि मुरली ललित कन्हाय।
ऊधो दीजो जाय जो प्यारी हे ब्रज राय ११११७॥
करि दराडवत स प्रीत ले ऊधो सरवी शीश ॥
चले योग को डोबहै गोप सरवा ब्रज रीत ११११८।
मन आनँद बढ़ाय धरि शीश कुल पद जाय।
सादर मिले जो मित्र हरि लीन्हों कराठ लगाय ११११९
रहे बहुत दिन लाय ब्रज कुशल पूँछि घनश्याम॥
देखे यशुमति नन्द ह्वां कौने विधि अभिराम ११२०।
कौन भाँति बीतत तिन्हे सो बिनु दिन औ रात ॥
प्रीति निरन्तर गोपिकन कहिये तिन की बात ११२१
ऊधो सुनि यह बैनहै पुलकि गात सब प्रेम ॥
भरि आये दृगनीर जो लरख्यो न ब्रज में क्षेम ११२२॥
भूल्यो यदुपति नाम मुख कह्यो सुनहु गोपाल ॥
कहि न जाय ब्रजरीति सो कहिये कहा कृपाल ११२३
तुम प्रभु दीन दयाल जो मोकूं ब्रजहि पठाय ॥॥

सुफल भयो जग जन्म ही ब्रज जन दरशन पाय ११२४
गयो जो मैं प्रभु ता दिना चरण कमल शिरनाय
साँझ समय वा दिन प्रभू पहुंच्यो गोकुल जाय ११२५
देख्यो ध्वज रथ दूरिते लखि रसाल पट पीत ॥
धाये गोपी ग्वाल सभ तुम्हें जान करि प्रीत ११२६
रथ पर मोहिं निहार पुनि रहे ठगे सब कोय ॥
चल्यो दृगन वह नीर पुनि पेर धरणी सुधर खोय ११२७
गई जो आशा टूट लखि भये बिकल बेहाल ॥
मानो सरुह फट्यो जो पुनि बिरह घाव जंजाल ११२८
तुम बिन यशु मति दुरित अति पूंछि कुशल रोउ बीर
कृष्ण कृष्ण लागी रटन चातक दूरित जो नीर ११२९
रही ठगोरी खाय हरि तज गये बिरध जो बेष ॥
सुत हित दशरथ प्राण तजि हूं निर भाग विशेष ११३०
दीन यशोदा माय यों दुरित रावरे हेत ॥ ॥
करि बितीत निशि गाय गुण नन्द दुःख बिकल समेत ११३१
नहिं सुहाय तुम बिनु कछू बोधे में बहु भाँति ॥
लखि तिन की गति ह्वै रही युग समान मोहिं राति ११३२
नन्द आयसु ब्रष भान पुर गयो नाथ उठ प्रात ॥
सुनि आई सब धाय तजि काम धाम अनुरात ११३३
पूंछि कुशल गद गद बचन भरे प्रेम जल नैन ॥
भयो तमारो तियन को सुन संदेह नहीं चैन ११३४

दूषरा कु बज़ा लाय उर कियो परेरवो नाथ ॥
सकल प्रेम पर बीन अति कहिन जाय गुरा गाथ ११३५
कह्यो कहानी हे सकल ज्ञान पन्थ हरि बैन ॥
लारव कह्यो उन एक दृढ़ ब्रत श्री पति सुख दैन ११३६
मेट वेद बिधि नीति उन गही गहन इक गूढ ॥
नट वर वपु गोपाल छबि भई हृदय आरूढ़ ११३७
नहिं सीखे कोऊ आन बिधि जो बिधि जाय सिखाय
जाउ वहां जानी परे चतुर शिरोमरिा राय ११३८॥
गयो चौकरी भूल निज भयो चकित तजि ऊर॥
कहा सिखाऊं योग उन पढ के मो शिर धूर ११३९॥
भई अगिन घृत जिम सबै सुन श्रवरान मो बैन॥
जाँची कोउ कांची नहीं सांची तिय गुरा रैन ११४०
चातक जिम दृढ़ पेज उन सगुरा प्रेम रस लीन॥
नहीं रोग जिन कों प्रभू तहां बैद कहा कीन ११४१
श्याम राम सुख धाम नित जिन्हें रैन दिन ध्यान॥
सरस भजन लखि तिन्हन को लागत फीको ज्ञान ११४२
खोज लख्यो षट मास ब्रज घर घर रीति समान ॥
प्रेम प्रीति धृति श्वास जिम कुरु क्षेत्र धन दान ११४३
वहीं रह्यो जो लुभाय मन लखि उन की हित रीत॥
भूलि सुरत निज आप की गये मास षट बीत ११४४
प्रभु सों आवत अवधि वरष गहि पुनि ब्रज माहिं॥

उनसँग उनसोह्वै गयो रह्यो सुरति कछु नाहिं ११४५।
बीत चुके षट मास ही समुझ परी जब मोंहि ॥
बिना कहें उठ भाज चलि जैबे त्रास जिय जोहि ११४६
ऐसे मोहिं हृदय अधिक करत शोच यह शाल ॥
करुणा सिन्धु अगाध तुम दीना नाथ दयाल ११४७
निठुराई क्यों मन धरें लेहिं न बिरद सँभार ॥
कौन सहायक दीन को निठुर निबाहन हार ११४८
पूरित सब सुख साज ही करत हैं निगम बखान॥
ब्रज सुदृष्टि सुख दीजिये मान बिरद की कान ११४९
तुम बियोग तन छीरा हैं ब्रज बासी नर नारि ॥
रहत लीन घन श्यामतन चातक रटन पुकारि ११५०
गति बृष भानु कुमार की कहूं सो कहिय न जाय॥
बिरह व्यथा बाधा अधिक भोगत काल बिताय ११५१
अवधि आश घट प्रारा हैं जिम तृरा अग्रक नीस ॥
क्यों करि तुम्हें सुहाय हरि हौं जिय रहत मसीस ११५२
दिजिये दरशन जाय हरि हरिये दुःख कृपाल ॥
मरत हैं व्याकुल ब्रज सकल करिये तिन्हैं निहाल ११५३
कह्यो यशोमति बिलख अति मुरली दे मो हाथ ॥
नन्दराय हित मान पुनि ब्रज आवैं ब्रज नाथ ११५४॥
जिन गैयन कों श्याम बन हित करि रहे चराय ॥
ते कुञ्जन बिडरी फिरत धाम नहीं पुनि आय ११५५

सुन ऊधो के बैन हरि उमगि प्रेम भरि नैन ॥ ॥
शाली उर ब्रज प्रीति ही विवश श्याम सुखदैन ११५६
मुरली लेहि हृदय धरी मगन भये ब्रज ध्यान ॥ ॥
भरि उशास हा ब्रज कह्यो पौंछित आप बहान ११५७
भले सखा तुम कीनयों बोल कह्यो नंदलाल ॥
दे आये ब्रज जनन कों भली सीख की चाल ११५८
मिल ब्रज जन मन साथ ही रहे ब्रज हि ब्रज नाथ ॥
सुख काज हित नाम कूं यदु बंशिन के साथ ११५९
सदा श्याम ब्रज में बसें साजें नट वर साज ॥
कोटि काम लावण्यनिधि अधर मुरलि का बाज ११६०
राजें नित ब्रज राज ब्रज ब्रज बासिन सुख देहिं ॥
प्रेम रूप ब्रज बास नित नित समीप सुख लेहिं ११६१
नित नव बन हिं बिहार ब्रज नित सुख रंग विलास
शोभा अपरम्पार नित वृन्दावन रस रास ॥ ११६२
ध्यावें ध्यान लगाय जेहिं सनकादिक अरु शेष
सुर नर मुनि अति भाव हित चित वें शंभु महेश ११६३
ब्रह्मा सन के धाम की सुनहु बात चित लाय ॥
गाई अति अभिराम ब्रज गोपिन महत बडाय ११६४
महि पावन वृन्दा विपिन परस चरण की धूर ॥
सो गति गोपिन की लहे धन्य भागि को पूर ॥ ११६५
ऐसें विधि महिमा अमित गोपिन गाय सुनाय ॥

पावन बृहद पुराण में वेद व्यास समुझाय ११६६
ब्रज विलास ब्रज राज को कहि किन पायो पार॥
भक्ति भाव हरि जनन को सरस भजन सुखसार ११६७

ग्रन्थ की समाप्ति॥

मन आनन्द हुल सत हियो भई पूर यह आश ॥
ब्रज बिलास सारावली कृत गोबर्द्धन दास ११६८
पढ़ी न विद्या काव्य की लख्यो न कोऊ ग्रन्थ॥
सुमिरन हरि हरिजनन को पायो सूधो पन्थ ११६९
बलि हारी हरिजनन की जिन के नाम प्रताप॥
गायो यश ब्रज राय को सुखद हरण भव ताप ११७०
हरि जन हरि दीउ एक ही सदा दीन हित कार॥
सेतु सहारपिपीलजिमिलंघ्यो सिन्धु के पार ११७१
भक्ति भाव बाणी बिमल सुनै सदा हरि दास॥
गावैं श्री गोपाल गुण नरव शिरव सुखकी रास ११७२
भूल चूक जो लखि परे लै हैं आप सुधार ॥
सुमिर कृष्ण के नाम को बिनवत बारम्बार ११७३

इति श्री ब्रजबिलास सारावली गोबर्द्धन दास
वल्लभी वैष्णव कृता सम्पूर्ण ॥

इति

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
८-कर्ण पर्व	९-शल्य पर्व	रामायण शब्दार्थको	आनन्दरघुनन्दन
९-शल्य पर्व वग-	१०-गदा पर्व	रामायण का इतिहास	धर्मजात नाटक
दा पर्व सौप्तिक पर्व	११-स्त्री पर्व	रामायण सादस टीपि-	हनू नाटक
मय योशिक व वि-	१२-स्वर्गारोहण प-	रामायण कवितावली	**वेदान्त**
प्लोक व स्त्री पर्व	रामायण रूक विलास	रामायण गीतावलीस	योग वाशिष्ठ
२०-शान्ति पर्व राज	रामायण तुलसी कृत	रामायण बालकीकाण्ड	पारस भाग
धर्म व आपद धर्म	रामायण सटीक मध्य	अद्भुत रामायण	सांख्य तत्व कौमुदी
व मोक्ष धर्म दान-	मानस दीपिका को-	विनय पत्रिका बाजो-	केनोप निषद
धर्म	य आदि	विनय पत्रिका वाशि-	ईशावास्य उपनिषद
२१-अश्वमेध आ-	तथा जिल्द बन्दी	लिंग पुराण	आनन्दाऽमृत वर्षिणी
श्रम वासिक पर्व	तथा सोरे अक्षरों की	विष्णु पुराण	सुन्दर विलास
व मौसल पर्व महा	भयुत सवीरव होय्द	वाराह पुराण	बीजक कबीर दास
प्रस्थान स्वर्गारो-	रामायण तुलसी कृ-	भविष्योत्तर पुराण	**राग**
हण पर्व	टीका सुखदेव लालस	स्कन्द पुराण	रागप्रकाश
२२-हरिवंश पर्व	रामायण तुलसीकृत	ब्रह्मोत्तर खण्ड	लावनी
महाभारत सबल-	टीका पुरुषोत्तम जी क	देवी भागवत	भजनसंगीत
सिंह चौहान कृत	रामायण तुलसी-	सुखसागर छापेदैप	गीत रसिका
१-आदि पर्व	कृत अलेहदा भी है-	तथा छपा पत्थर	कृष्ण गीतावली
२-सभा पर्व	१-बालकाण्ड	शुक्रनीति	कानून सितार नागरी
३-बन पर्व	२-अयोध्याकाण्ड	सुदामा चरित्र	रासलीला
४-विराट पर्व	३-आरण्यकाण्ड	स्त्री अनुरागरस	नवरत्न भाष्य वृन्दावन
५-उद्योग पर्व	४-किष्किन्धाकाण्ड	सोहागरलीला	विलास
६-भीष्म पर्व	५-सुन्दरकाण्ड	**नाटक**	भजनावली
७-द्रोण पर्व	६-लंकाकाण्ड	प्रबोध चन्द्रोदय	रीडर नम्बर १
८-कर्ण पर्व	७-उत्तरकाण्ड	राजाभिषेक	रीडर नम्बर २

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
क़िस्सा वग़ैरह	सुतफ़र्क़ात	स्वयम्बोध	ज्ञानस्वरोदय
नानार्थनी संग्रहाव	धनिश्चरकी कथा	ज्ञान चालीसी	रसलसार
ब्रह्मसार	ज्ञानमाला	दोहावली	रसल नौरत्न
शिवसिंहसरोज	गोपीचन्द भरतरी	बालाबोध	इन्द्रजाल
भक्तमाल	कथा श्री रांगाजी	विद्यार्थीकी प्रथम पु-	संस्कृत की पुस्तकें
इन्द्रसभा	अवधयात्रा	किताब जंत्री	लघुकौमुदी
विक्रम विलास	दानलीला व नाग-	अगीत कामधेनु	सिद्धान्त चन्द्रिका
वैतालपचीसी	लीला	लीलावती	भाषातत्व प्रकाश
सिंहासन बत्तीसी	दोहावली रत्नावली	पटवारियों की पुस्तक	पञ्चमहायज्ञ
शुक बहत्तरी	गोकर्णी माहात्म्य	४ भाग	निर्णयसिन्धु
बकावली सुमन	श्री गोपालसहस्रना-	वैद्यक भाषा	संग्रह शिरोमणी
चहारदरवेश	कथासत्यनारायण	निघंट	भगवद्गीता पंचरत्न
क़िस्सा हातम ताई	हनुमान बाहुक	भ्रमरविनोद	दुर्गापाठ सटीक
अपूर्व कथा	जनक पचीसी	वैद्यजीवन	दुर्गापाठ मूल
क़िस्सा गुलसनोवर	हरिहर सगुण निर्गु-	औषधिसंग्रह कल्प	विष्णु भागवत
दास्तान अमीरहमज़ा	णा पदावली	अमृतसागर बड़ा	कथा यम द्वितीया
सहस्र रजनी चरित्र	बनयात्रा	तथा छोटा	अपराध भञ्जनस्तोत्र
राबिन्सन का इतिहास	कायस्थवर्णनिर्णय	वैद्यमनोत्सव	कायस्थकुलभास्कर
सीताहरण	विहारवृन्दावन	दिव्यगान	कायस्थधर्म निरूप-
सती विलास	रसरविहार वृन्दावन	इलाजुलगुर्बा नामी	तथा छोटा
क़िस्सा ग़ैरतबेरत	कल्पभाष्य	ज्योतिष भाषा	मथुरा सभा
सांगीत प्रह्लाद	लक्ष्मीसरस्वती संवाद	जातकचन्द्रिका	मार्कण्डेयपुराण
मनोहरकहानी	दरसी	जातकालंकार	वाराहीसंहिता
दिलबहलाव	अक्षरावली	दैवज्ञाभरण	इत्यादि



